# साप्ताहिक भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी
सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

**मेष** : हालात अनुकूल चलेंगे, लाभ खर्च बराबर ही, संघर्ष काफी आयेंगे, सफलता मिलती रहेगी पर देर से, कामधन्धा ठीक चलेगा, यात्रा सफल, आय यथार्थ, फरवरी में कारोबार यथापूर्व ही।

**वृष** : कामकाज का बोझ ज्यादा महसूस होगा, खर्च बढ़ेगा, हालात साजगार चलेंगे, कोई विशेष काम पूरा हो जावेगा, आर्थिक लाभ अच्छा होगा, यात्रा में सुख, परिश्रम सफल रहेगा, लाभ देर से रहेगा।

**मिथुन** : घरेलू चिन्ता बनेगी, लाभ खर्च समान ही, अच्छे लोगों का सहारा रहेगा, परिवार से सुख, परेशानी अकारण ही रहेगी, जरूरी काम भी अधूरे ही रह जायेंगे, यात्रा सफल, लाभ अच्छा।

**कर्क** : दिन ठीक नहीं, सेहत खराब, कारोबार मध्यम, हालात में सुधार होता जावेगा, भाग्य साथ देगा, सफलता नसीब होगी, काम भी समय पर बनते रहेंगे, यात्रा सफल, लाभ में वृद्धि, यात्रा की आशा है।

**सिंह** : यात्रा सावधानी से करें, कारोबार अच्छा चलेगा, अकारण झगड़े झंझटों से परेशानी, किसी विशेष काम पर खर्च ज्यादा होगा, कामकाज की दशा सुधरेगी, राजकाज में सफलता, काम देर से बनेंगे।

**कन्या** : दौड़-धूप अधिक, झगड़े आदि से बचें, कामों में व्यस्तता काफी रहेगी, यात्रा हो सकती है, लाभ यथार्थ, व्यय बढ़ सकता है, परिश्रम से काम बन जायेंगे, नातेदारों से मेल-जोल, गुस्सा अकारण ही रहेगा।

**तुला** : घरेलू खर्चा काफी होगा, यात्रा की आशा है कामकाज का बोझ बढ़ेगा, लाभ भी अच्छा होगा और काम भी ठीक समय पर बनते जायेंगे, आर्थिक दशा सुधरेगी, कारोबार ठीक चलेगा।

**वृश्चिक** : लाभ बढ़ेगा, व्यापारिक योजनाओं पर व्यय, आर्थिक चिन्ता पैदा होगी, कामों में अड़चन आएगी, जल्दबाजी या गुस्से से काम न लें, यात्रा सफल, व्यापार बढ़ेगा, प्रयासों में सफलता।

**धनु** : यात्रा हो सकती है, काम बनते रहेंगे, व्यय बढ़ेगा, संघर्षमय हालात चलेंगे, कामों में काफी व्यस्तता रहेगी, आशाओं में सफलता, गुस्सा अकारण ही रहा करेगा, छोटी-छोटी समस्याएं अधिक रहेंगी।

**मकर** : आय-व्यय समान, नातेदारों से मेल-जोल, अकारण झगड़े झंझटों से मन परेशान, जल्दबाजी या गुस्से में कोई भी फैसला न करें वर्ना पछताना पड़ेगा, कोई अधूरा काम बन जावेगा, लाभ अच्छा रहेगा।

**कुम्भ** : अकारण वैर-विरोध से परेशानी, अच्छे लोगों का परामर्श लाभप्रद रहेगा, वातावरण कुछ सुधरेगा पर ऋण आदि के कामों में सावधानी से काम लें, व्यापारिक दशा सुधरेगी, शुभ-सूचना या लाभ होगा।

**मीन** : छोटी-छोटी उलझनों से परेशानी, यात्रा सफल रहेगी, संघर्षमय हालात चलेंगे, परन्तु भाग्य आपका साथ देगा और परिश्रम करने पर सफलता मिलती रहेगी, कामधन्धा ठीक चलेगा, लाभ बढ़ेगा।

# आपके पत्र

दीवाना का ३४ वां अंक आज बहुत दिनों के बाद मिला, पहला पृष्ठ पलटते ही 'आपके पत्र' पर नजर पड़ी, उसमें अपने पत्र को छपा देख कर दिल को बहुत खुशी हुई। मगर अंक ३४ पढ़कर निराशा भी हुई क्योंकि इस अंक में एक भी कहानी नहीं छपी थी। मोटू-पतलू एक नई रोचकता लेकर आये। 'क्यों और कैसे' हमारे सामान्य ज्ञान में वृद्धि करता है। 'सिलबिल-पिलपिल, काका के कारतूस, बन्द करो बकवास, अच्छे लगे। मगर 'मदहोश' गायब था। यदि हम काका के कारतूस, आपस की बातें, गरीब चन्द की डाक में सवाल भेजें तो क्या जवाब दिया जाएगा ?

**सुरजीत सिंह लाम्बा—फरीदाबाद**

**पाठकों द्वारा भेजे गये प्रश्नों के उत्तर देने की हर सम्भव कोशिश की जाती है। -सं०**

मैं दीवाना का सबसे पुराना पाठक हूं। दीवाना एक ऐसी पत्रिका है जो कि हास्य व्यंग के साथ-साथ शिक्षाप्रद भी है। और इसके स्तम्भ सब एक से बढ़कर एक हैं।

एक बात और, मेरे ख्याल से पत्रिकाओं में शायद 'दीवाना' ही एक मात्र पत्रिका है जिसमें सबसे ज्यादा स्तंभ है।

कृपया आप 'दीवाना' में रंग भरो प्रतियोगिता पुनः आरम्भ करने का कष्ट करें।

**मुकेश भटनागर—चित्तौड़गढ़**

मैंने आपका तेज साप्ताहिक दीवाना का अंक ३३ पढ़ा।

पढ़कर तबियत हरी हो गई। अंक संग्रहणीय है। काका के कारतूस 'मोटू-पतलू' फूल गिरे हैं गुलशन गुलशन, सवाल यह है मदहोश, बन्द करो बकवास पसन्द आये।

देवी देवता मॉड फैशन में और डा० राम सिया सिंह की कहानी उससे मेरा क्या वास्ता काफी अच्छी लगी।

**निर्मल कुमार सिंह—हजारीबाग**

अंक ३३ मिला जिसमें मुख पृष्ठ देखकर इतनी हंसी आई कि रोक ही न सका। इस अंक में पंचतन्त्र, आदि मानव, मोटू-पतलू, देवी देवता मॉड फैशन में, फैण्टम, बन्द करो बकवास, मदहोश, सवाल यह है, परोपकारी देखकर बहुत हंसी आई। स्तम्भ काफी अच्छे थे। इस अंक में अपनी तर्क-कुतर्क देखकर बहुत खुश हुआ।

**दिनेश राज बज्राचार्य—नेपाल**

दीवाना का ३४वां अंक मिला। पढ़कर अत्यन्त खुशी हुई। दीवाना में लेखिका 'संगीता द्वारा लिखा गया (अनहोनी) उपन्यास बहुत पसन्द आया एवम् पत्रिका में दिये हुए कार्टून भी बहुत पसन्द आये तथा मोटू-पतलू, फैण्टम बहुत अच्छे लगे। अब मैं आशा करता हूँ कि दीवाना का हर अंक इतना अधिक चटपटा होगा जितना अभी है। [illegible] बार की तरह ये अंक इस बार [illegible] पसन्द आया।

**हेमन्त पह्वाई (जयेशोला)—नेपालगंज**

दीवाना का अक ३४ मिला। मुख पृष्ठ पलटते ही 'पंचतंत्र' देखने को मिला, जो कि बहुत ही अच्छा लगा। फिर तो हर पृष्ठ पर हंसी और खुशियों का खजाना मिला। यह अंक और अंकों की अपेक्षा कुछ ज्यादा मनोरंजक था। विशेष कर मुझे 'विभिन्न व्यवसायों वालों को बीवियों के लिए बिंदियों के उपयुक्त डिजाइन बहुत ही पसन्द आया इसमें भी मंत्री की 'बीवी' और गुण्डे की 'बीवी' के बिंदियों के डिजाइन सबसे अच्छे लगे। 'जानवर नेता क्यों नहीं बनते ?' भी रोचक था। शेष सभी स्थायी स्तम्भ अपनी जगह पर मनोरंजक लगे।

**अनिल कुमार गुप्ता—तपकरा (म० प्र०)**

## मुख पृष्ठ पर

सुनो सुनो ऐ दुनिया वालो
जहीर अब्बास की दुखद कहानी
बड़ी उम्मीदें लेकर आया
लेकिन फिर गया सब पर पानी।
पाक के लिये कुछ करन पाया
रन बनाने की मशीन था जहीर
दो या तीन पर अटक गया वो
कपिल ने पकने दीन खीर॥

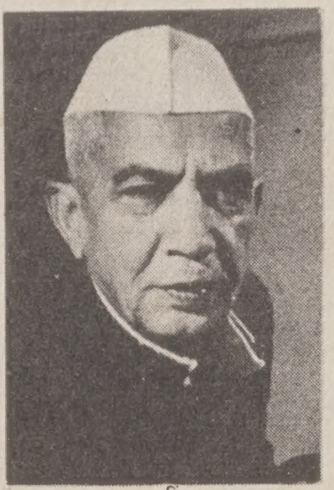
दीवाना

अंक : २ वर्ष १६ : १ फरवरी १९८०

सम्पादक: विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका: मंजुल गुप्ता
उपसम्पादक: कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

चन्दें
छमाही: २५ रु० वार्षिक: ४८. द्विवार्षिक: ९५ रु०

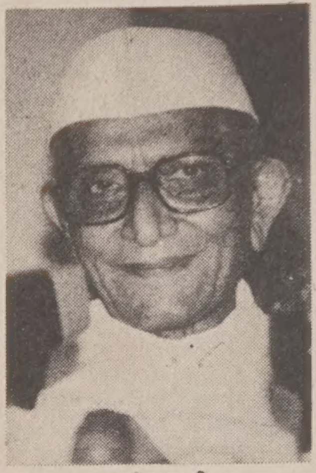
# फिल्मी गानों का रंग राजनीति के संग



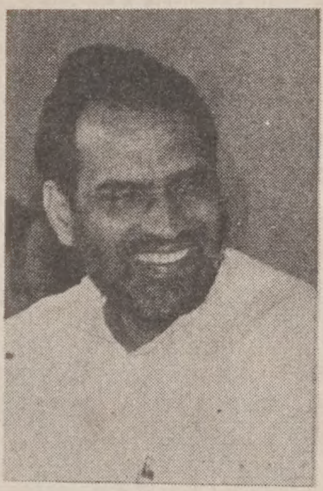
चरणसिह

ये क्या हुआ
कैसे हुआ क्यों हुआ
चलो छोड़ो ...

सब कुछ लुटा
के होश में आए
तो क्या किया ...



मोरारजी



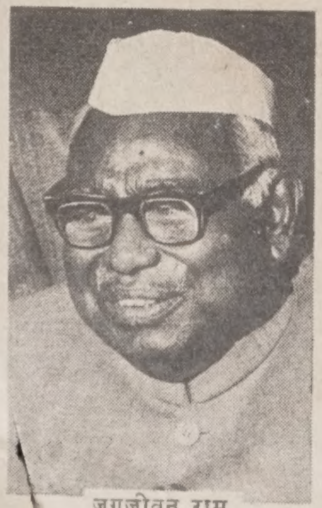
चंद्रशेखर

यह दुनिया
यह महफिल मेरे
काम की नहीं ...

हम तुम से
जुदा होके मर जायेंगे
रो रो के ...



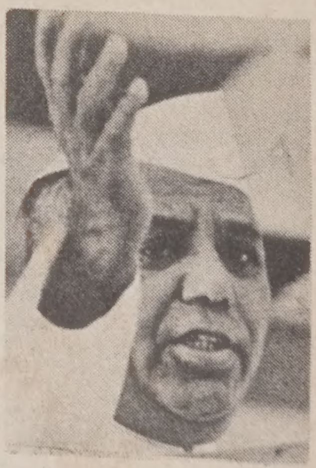
देवराज अर्स



जगजीवन राम

दिल का
खिलौना
हाय टूट गया ...

गम दिये मुस्तकिल
कितना नाजुक है दिल
यह न जाना, हाय हाय
ये जालिम जमाना



चवन

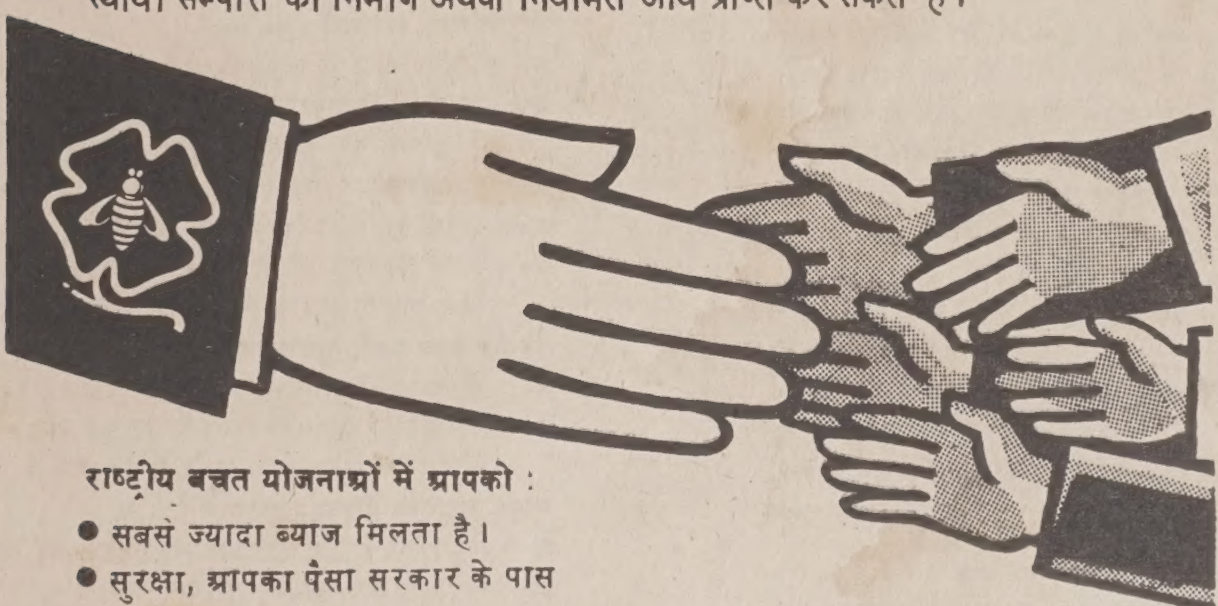
# खुशहाली के लिए बचत

अपने गणतंत्र की 30वीं वर्ष गांठ के अवसर पर हम दृढ़ संकल्प और अत्यधिक उत्साह के साथ अपने निर्धारित लक्ष्य की ओर बढ़ते हैं जो है—सभी के लिए बेहतर भविष्य।

आइए, हम सब राष्ट्रीय बचतों में धन लगाएं। यह भी एक प्रकार से देश सेवा का काम है। इससे आपका धन बढ़ता है।

सम्पूर्ण देश में 5 करोड़ से भी अधिक लोग अब तक खाते खोल चुके हैं।

राष्ट्रीय बचत योजनाओं के जरिए आप करों में छूट का लाभ उठाते हुए स्थायी सम्पत्ति का निर्माण अथवा नियमित आय प्राप्त कर सकते हैं।



**राष्ट्रीय बचत योजनाओं में आपको :**

- सबसे ज्यादा ब्याज मिलता है।
- सुरक्षा, आपका पैसा सरकार के पास सुरक्षित रहता है।
- आकर्षण—इनामी योजना, छोटे बचत कर्ताओं के लिए मुफ्त बीमा और ज्यादा धन लगाने वालों के लिए करों में रियायतें।
- एजेन्ट और महिला प्रधान आपके पास से घर बैठे पैसा इकट्ठा कर लेती हैं।
- नामांकन की सुविधा।
- बचत पत्र, सावधि जमा खातों को जमानत देने अथवा बैंक से ऋण लेने के लिए प्रयोग में लाया जा सकता है।

राष्ट्रीय बचत संगठन,
पोस्ट बाक्स 96,
नागपुर-440001

डीएवीपी 79/409

# काका के कारतूस

प्रश्न 'दीवाना' के दीवानों के, उत्तर काका हाथरसी के



**योगेश कुमार अग्रवाल, डीमापुर (नागालैंड)**

प्र० : शाहजहां ने अपनी महबूबा की याद में ताजमहल बनवा दिया, आप क्या करेंगे ।

उ० : महबूबा बुढ़ापे में कोई आज नहीं मिलती ।
मैं ताज तो बनवा दूं, मुमताज नहीं मिलती ॥

**मदन किशोर होतवानी, रायपुर (म. प्र.)**

प्र० : सच्चाई की कमाई और बुराई की कमाई में क्या फर्क है ?

उ० : बिलखते भूख से बच्चे, भलाई की कमाई से ।
इलेक्शन जीत आए वे, बुराई की कमाई से ॥

**अशोक जौहर, नीलम (देहरादून)**

प्र० : दोस्ती का तकाजा कब मंहगा पड़ जाता है ?

उ० : जब मांगे तब दोस्त को, दे दीजे कुछ कर्ज ।
करो तकाजा दोस्त की बदल जाएगी तर्ज ॥

**सतीश वर्मा विमोर, जोगपारा (रायपुर)**

प्र० : भेज रहे हैं प्रश्न यह, एक आपके पास ।
शिशु रोता क्यों जन्मते, नहीं सुनाता हास?

उ० : हंसना-रोना खो जाएगा, इक दिन ऐसा आएगा ।
पैदा होते-होते बच्चा फिल्मी गीत सुनाएगा ॥

**मोहम्मद इब्राहीम, नांदेड़ (महाराष्ट्र)**

प्र० : आप काकी से उतना हो प्यार करते हैं जितना मजनूं ने लैला से किया था ?

उ० : कुछ दिन वैसा ही चला, उनसे अपना प्यार ।
उस ढर्रे के प्यार पर अब पड़तीं फटकार ॥

**विजय कुमार गुप्ता, श्री गंगानगर (राज०)**

प्र० : आदमी आदत से मजबूर कब होता है ?

उ० : समय-समय पर सुनकर देखें उनके भाषण ।
आदत से मजबूर हमारे राजनरायण ॥

**नरेन्द्र कुमार निंदी, कपूर थला**

प्र० : खूबसूरत औरत का गुस्सा कैसा लगता है ?

उ० : उनको आता है प्यार पर गुस्सा,
हमको गुस्से पे प्यार आता है ।
(कपूरथला में कोई तो होगी सुन्दरी कपूरी,
देख लो अजमा कर, हो जाए इच्छा पूरी)

**हरदेव सिंह, लुधियाना (पंजाब)**

प्र० : दीवाना का चिल्ली कौन सी बूटी सूंघता है, चेहरा वैसा का वैसा ही दिखता है ?

उ० : चिल्ली ने भी पकड़ ली, दल बदलू की राह ।
रंग-ढंग वह बदलता रहता प्रति सप्ताह ॥

**हबीब मंसूरी 'यादगार' रावतभाटा (कोटा)**

प्र० : जब बिजली जलती है तो मीटर चलता है, जब दिल जलता है तो क्या चलता है ?

उ० : बिजली से मीटर चले, सारंगी से राग ।
दिल जलने के साथ ही, दौड़ लगाए दिमाग ॥

प्र० : काका जी ! परोपकार का महत्व बताइए ।

उ० : नशाबंद, नसबंद थे, दोनों ही उपकार ।
इनका यह बदला मिला, पलट गई सरकार ।

**विजय कुमार चौहान, लुधियाना**

प्र० : आपकी दाढ़ी नकली है या असली ?

उ० : लटका करके आइए, अपनी जुल्फ हजूर ।
खींचतान दोनों करें, शंका होवे दूर ॥

**मो० इसराइल, ऐनासलामपुर**

प्र० : काकी जी आपसे उम्र में कितनी छोटी हैं ?

उ० : ऊंची-नीची उम्र पर, हम क्यों करें विवाद ?
चावल जितने पुराने, उतना ही दें स्वाद ॥

**ए० जब्बार 'अकेला', बीकानेर**

प्र० : उड़ती हुई पतंग देखकर क्या अब भी आपका मन पतंग उड़ाने को चाहता है ?

उ० : पतंग काकी उड़ाती हैं, काका कनकउआ,
प्यार के पेंच बुढ़ापे में मज़ा देते हैं ।

**बलवीर सिंह, न्यू रणजीत नगर, नई दिल्ली**

प्र० : यदि आकाश में तारे नहीं होते तो क्या होता ?

उ० : चार दिना की चांदनी है प्रसिद्ध यह बात ।
विरहिन कैसे काटती, तारे गिन-गिन रात ॥

**कैलाश शर्मा, खरसिया (म० प्र०)**

प्र० : प्यारे काका ! सच्चे दोस्तों की पहचान क्या है ?

उ० : तरह-तरह के दोस्त हैं, भांति-भांति के यार ।
दो दोस्तों की दोस्ती से टूटी सरकार ॥

**सतपाल, कार्गवाल, गुहला**

प्र० : आपकी पुस्तकें कितनी हैं, कहां मिलेंगी ?

उ० : पुस्तक अट्ठाइस हुईं, हास्य-व्यंग्य-नवनीत ।
मिल जाएंगी हाथरस, केयर ऑफ 'संगीत' ॥

**तसनीम अहमद खाँ, मुरादाबाद**

प्र० : मुहब्बत करने वालों को तड़पना कब पड़ता है ?

उ० : प्रेमी जी का उस समय, दिल-दिमाग कुढ़ जाय ।
फँसी हुई चिड़िया अगर, पिंजड़े से उड़ जाय ॥

**अब्दुल रब, टूल्स डीलर, सहारनपुर**

प्र० : कोई किसी के दिल को तोड़ने की कोशिश करे तो ?

उ० : और सभी दिल छोड़कर, इन्दिरा का दिल कूत ।
चोटें जितनी पड़ीं वह, और हुआ मजबूत ॥

**अजीत सिंह, अमीर सिंह, शिमला (हि० प्र०)**

प्र० : इस दुनिया में सीधे-सादे, ईमानदार व्यक्ति गरीब क्यों रह जाते हैं ?

उ० : भ्रष्टाचारी बन गए, जब नेता श्रीमान,
बिना मौत के मर गया, कलियुग में ईमान ।

**उत्तम शाक्य, भद्रपुर (नेपाल)**

प्र० : कुछ आधुनिक लड़कियां, लड़कों को फंसाने की चेष्टा क्यों करती हैं ?

उ० : पिता गरीबी से ग्रसित, दे नहीं सके दहेज,
लव मैरिज की आड़ में, पति करले ऐंगेज ।

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें ।

**काका के कारतूस**
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

# किस्सा हजार रुपए का

हसन जमाल

मियां उलफेन बड़े सफाई पसंद थे।

गंदगी से उनको खुदा वास्ते का बैर था। मक्खी, मच्छर, धूल-मिट्टी, कीचड़ गोबर, छींक-थूक, नाक का पानी, ग्रांख का कीच कुछ भो उनको बरदाश्त न होता था। कपड़े बेदाग पहनते। पान इसलिये नहीं खाते थे कि इससे दांत गंदे हो जाते थे ग्रौर कपड़ों पर छींटे लगने का डर रहता था। यहां तक कि पान की दुकान पर भी खड़े न होते। सफर पर निकलना होता तो हमेशा एक महीने पहले रिजर्वेशन करवाते। सिनेमा जाते तो बाक्स या बालकनी का टिकट लेकर वह भी अंतिम दिनों में ताकि भीड़ के धक्कम पेल में कपड़े 'मैले' न हो जायें।

एक बार वे तांगे में बैठकर कहीं जा रहे थे। तांगा अहमद कोचवान का था। शहर का नामी तांगा। असील घोड़ा, खूबसूरत तांगा। ग्रहमद कोचवान का रेट भी ऊंचा था। दूसरे दो रुपये मांगते तो वह तीन रुपये लेता। मियां उलफेन ने तीन रुपये खर्च करना बरदाश्त किया लेकिन किसी ऐसे-वैसे तांगे में नहीं बैठे।

तांगा उनके घर के सामने रुका। वे बड़ी शइस्तगी से उतरे। जेब में से पैसे निकाल कर रुपये गिनने लगे। घोड़ा लाख असील सही, लेकिन था तो जानवर ही। इंसान होता तो (एक उंगली की जगह) एक टांग उठा कर बोलता, मियां अहमद हमें पेशाब लगी है। जरा 'जुग्रा' उतार टेको 'नुक्कड़ के चौक में निबट ग्राएं।'

लेकिन घोड़ा बोल नहीं सकता था। ग्रलबत्ता जहां खड़ा होना, पेशाब कर सकता था, भले ही वह मियां उलफेल के मकान के सामने ही क्यों न खड़ा हो।

'लाहौल विला कूबत।' मियां उलफेन, बिदककर दूर हटे, लेकिन पेशाब के छींटे बड़ी बेशरमी से उनके बेदाग पाजामे पर पड़ कर ग्रपने चिन्ह अंकित करने में सफल हो गये।

मियां उलफेन को इस कदर गुस्सा ग्राया कि आव देखा न ताव, एक करारा थप्पड़ घोड़े के मुंह पर दे मारा। घोड़े का तो कुछ न बिगड़ा, जनाब का हाथ उतर कर रह गया। कई दिनों तक हाथ पर प्लास्टर चढ़ाये फिरते रहे। पेशाब के छींटों वाला पाजामा फिर कभी नहीं पहना, उन्होंने।

ग्रादमी जिस चीज से दूर भागता है, वह चीज लगभग उसका पीछा करती है—साये की तरह। मियां उलफेन को गंदगी से 'एलर्जी' थी, लेकिन गंदगी को जैसे उनसे प्यार हो गया था। अब उस दिन की बात ही ले लो। फ्रूट की दुकान पर खड़े थे। ग्रव्वल तो वे सब्जी मंडी जाते ही कम थे। जाते तो लपक कर बाहर निकल ग्राते। सब्जी मंडी उनके नजदीक बहुत गंदी जगह थी। लेकिन बेगम का फरमान घर शाम को लौटते वक्त सेब जरूर लेते आयें। तो जनाब ग्राप सेब वाले को पैसे देना चाह रहे थे। पर्स में हजार रुपयों के नोट पड़े थे। एक ग्रासामी ने बरसों पुराना हिसाब चुकता किया था ग्राज ही।



ग्रचानक हल्ला हुग्रा: सांड ग्राया, सांड ग्राया।

लोग छितरा कर सड़क के किनारे खड़े हो गये। घबराहट में मियां उलफेन के हाथों से पर्स गिर पड़ा। उन्होंने झुक कर उठाना चाहा तो होश जाते रहे। बटुए साहब ठीक गोबर के बीच बैठे आराम फरमा रहे थे। वह तो खैरियत हुई, खुद उनका पैर गोबर पर नहीं पड़ा वर्ना चमक-दमक जूती लक दक हो जाती गोबर में।

उनको काटो तो खून नहीं। पाँच दस रुपयों का मामला होता तो राह ले लेते ग्रपनी। यहां पूरे एक हजार रुपये थे जो बरसों बाद किसी ग्रासामी से मिले थे। उन्होंने इधर-उधर देखा फिर दुकानदार से कहा, भाई साहब जरा ये पर्स निकाल दीजिये।'

'क्यों साहब, ग्रापके हाथ नहीं है?' दुकानदार का जबाव हथौड़े की तरह उनके दिल पर लगा।

मन मसोस कर रह गये। तभी फटी हुई बनियान, घुटनों तक धोती पहने एक मैला-कुचला मजदूर उधर से गुजरा। मियां उलफेन ने पुकारा, 'ए भैया! जरा इधर तो आना।'

मजदूर ठहर गया, 'क्या है बड़े मियां?'

उसने पीले भद्दे दांत निपोरे तो उनको उबकायी ग्राने लगी। ग्रांखें मींच, कड़ुग्रा मुंह बनाते हुए बोले, 'जरा यह पर्स उठा देना।'

'ग्रापका है?'

'नहीं तो क्या, तुम्हारा है? मेरा ही तो है।' उनको क्रोध ग्रा गया।

मजदूर भी मुँहफट था, 'आप खुद क्यों नहीं उठा लेते?'

'खुद उठा लेता तो तुम्हें क्यों बुलाता?' फिर नरम बनकर बोले, मैं तुम्हें बीस रुपये दूंगा।'

'ग्रगर नहीं उठाऊं तो…'

'तो…तो तुम्हारा भुरकस निकाल दूंगा।' उन्होंने दांत पीस कर कहा।

मजदूर यूं तो पर्स निकाल कर दे देता लेकिन मियां उलफेन के व्यवहार ने सारा गुड़ गोबर कर दिया। मजदूर भी शेर बन गया। मियां उलफेन की आंखों में ग्रांखें डाल कर बोला, 'क्या कहा?'

कुछ नहीं। कुछ नहीं।' वे घबरा कर दो कदम पीछे हट गये। मजदूर बड़बड़ाता हुग्रा चलता बना।

लाचार होकर पर्स खुद उनको उठाना पड़ा। पर्स तो उठा लिया, खुद वहीं कै करने बैठ गये। फिर खुदा जाने कैसे पब्लिक नल तक गये। हाथ-मुंह धोया। पर्स को साफ किया।

घर पहुंचे तो इस वारदात की खबर पहले ही पहुंच चुकी थी। चटपटी खबर हो तो उसमें सौ ग्रश्व मेगावाट की शक्ति ग्रा जाती है। ऐसा लगता है जैसे लोग ताक में ही रहते हैं, इधर खबर कैच की, उधर उछाल दी।

बेगम ने नथूने फड़काते हुए कहा, 'ये गोबर की बदबू कहां से ग्रा रही है?'

'कहां है बदबू?' मियां उलफेन बनते हुए बोले।

'बेगम ने पास ग्राकर हाथ सूंघे' छी…छी…इनमें तो गोबर की बदबू ग्रा रही है। कहीं से उपले थापकर ग्रा रहे हैं क्या? इतने सफाई पसंद हैं ग्रौर…'

'चुप भी रहो बेगम।' मियां की ग्रांखों में ग्रांसू ग्रा गये, 'कोई सुन लेगा तो नाक कट जाएगी, हमारी मिट्टी पलीद कर दी, ग्राज।'

शेष पृष्ठ ३५ पर,

# कुत्तों के चक्कर में

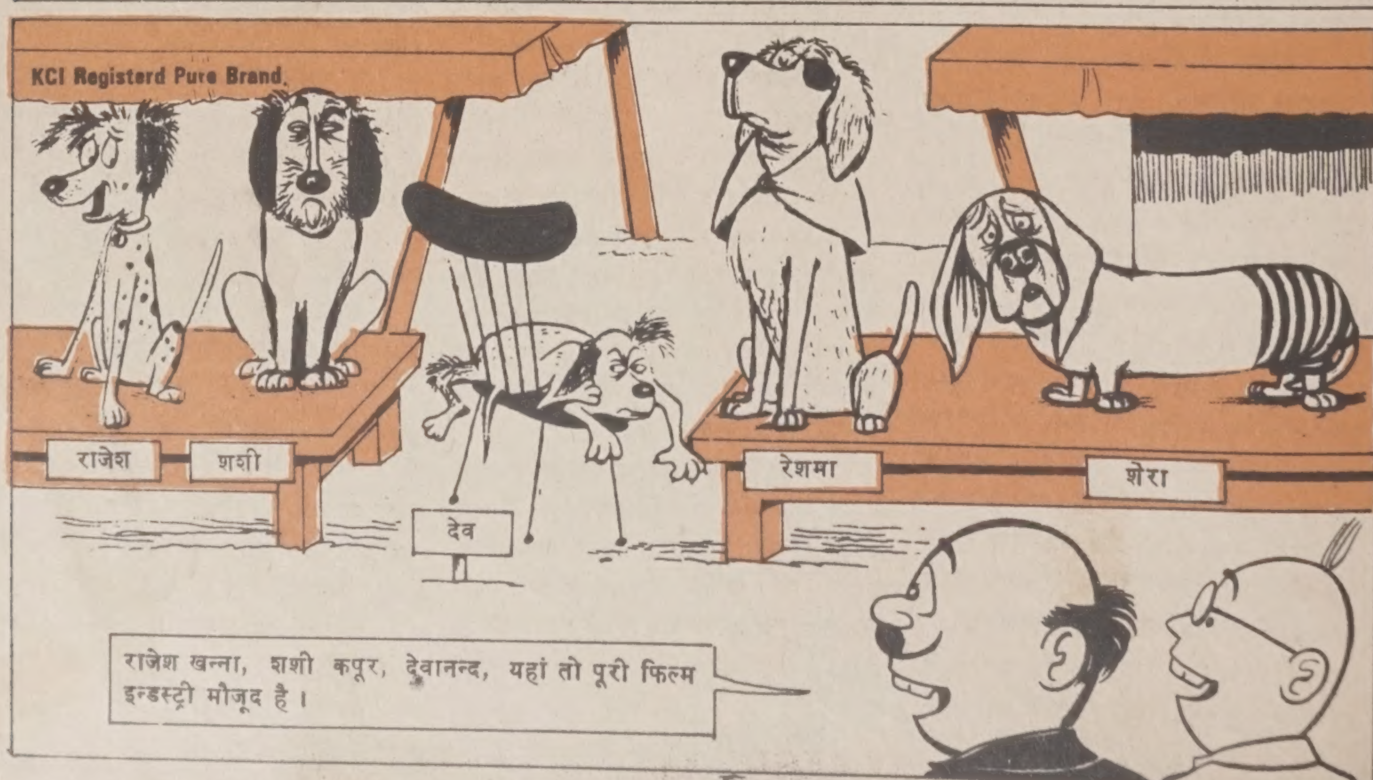
चुनाव के हंगामों की गर्द बैठ गई और राजनीतिक उथल-पुथल समाप्त हुई, तो मोटू-पतलू ने भी चैन का सांस लिया और कसम खाई कि अब वे कोई मुसीबत मोल नहीं लेंगे। पर मोल न लेने की कसम खाने से क्या होता है। कुछ मुसीबतें तो मुफ्त में ही गले पड़ जाती हैं।

पिछले दिनों दिल्ली में कुत्तों की एक शानदार नुमाइश हुई। वहां कुत्तों की कितनी ही कीमती और नायाब किस्में थीं। घूमते-फिरते किस्मत के मारे मोटू-पतलू भी वहां जा पहुंचे। इसके बाद जो कुछ हुआ उसका आंखों देखा और कानों सुना हाल आप की सेवा में प्रस्तुत है।










यह नसल भारत में बिल्कुल नई है २२०० रुपये ।
मूल्य १५०० रुपये ।
इसके माँ बाप फ्रांस से भारत आये ।
THIS ABOVE ALL ERIC KNIGHT
मूल्य ५००० रुपये ।
अरे यहां कुत्तों का बाजार भी लगा है । कुत्ते बिक भी रहे हैं ।
कितने-कितने कीमती कुत्तें हैं यहां । आदमी का इतना मूल्य नहीं । तू मेरे गले में जंजीर डाल दे तो मुझे कोई आठ आने में भी नहीं खरीदेगा ।
तभी वहां कुत्तों ने अपने मालिकों से बगावत कर दी और डाग शो में खलबली सी मच गई ।
और कुछ कुत्ते अपनी जंजीरें छुड़ा कर वहां से भाग खड़े हुए ।
वह कुत्ता मैं तुम्हें बेच चुका हूं। पांच हजार रुपये निकालो ।
डाग शो
मैं पांच पैसे भी नहीं दूंगा । वह तुमसे जंजीर छुड़ा कर भागा है ।
और इस खलबली में पूरे डागशो का सत्यानाश हो गया और मोटू-पतलू अपने घर की ओर चल दिए ।
सारा मजा किरकिरा हो गया । कुत्तों की धींगामस्ती ने जनता पार्टी के नेता की याद ताजा करवा दी ।

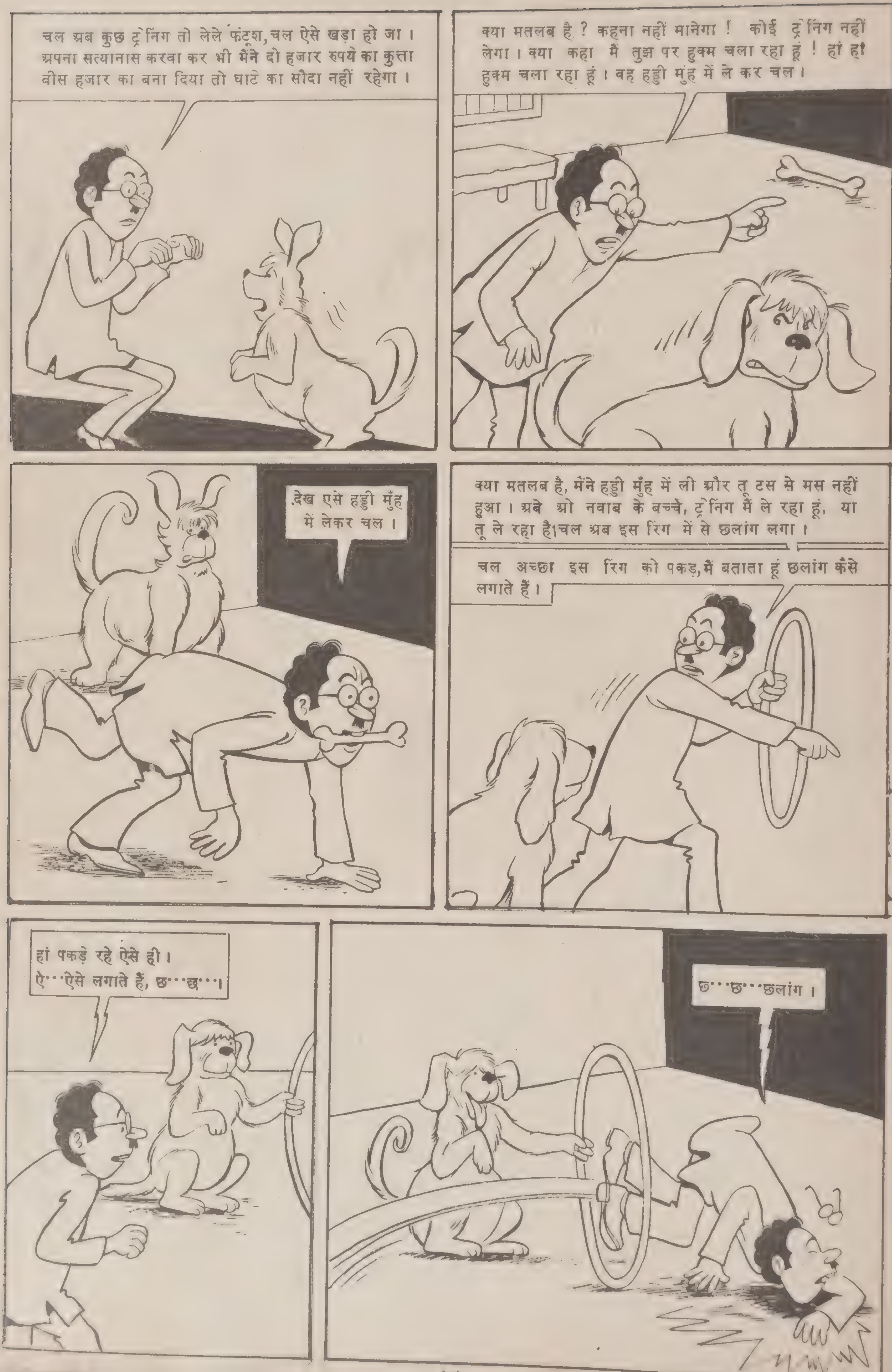


कुछ दूर आगे चलकर मोटू-पतलू ने पीछे मुड़कर देखा तो यह जान कर दंग रह गये कि एक कुत्ता उनके पीछे-पीछे आ रहा था।
अरे वाह। कमाल हो गया। डाग शो से भागा कुत्ता हमारे पीछे-पीछे आ रहा है।
यह तो वही कुत्ता जान पड़ता है जिसकी कीमत कोई पांच हजार रुपये बता रहा था।
बड़ा प्यारा है। पांच हजार से भी अधिक का होगा। मुफ्त हाथ आ गया। इसे अपने घर ले चलो।
कैसे ले चलें। इसके गले में जंजीर तो है ही नहीं।
कहीं रास्ते में गिर गई होगी। कूएं पर से वह रस्सी लेकर उससे बांध लो।
अब पैदल क्या चलेंगे। पांच हजार का नाजुक मिजाज कुत्ता है। इसके लिए टैक्सी कर लो।
ऐ टैक्सी।
टैक्सी का दरवाजा खुला तो अब कुत्ता सबसे अधिक जल्दी में था।
शुरू में ही इसने जाहिर कर दिया कि यह खानदानी कुत्ता है। कार से नीचे तो यह कदम नहीं रखता होगा।
क्या नवाबों की तरह बैठा है जैसे इसकी सात पुश्तें गाड़ियों में हवाखोरी करती आई हैं।
मेरे बस का नहीं है इस तरह गाड़ी चलाना। गाड़ी से नीचे उतरो और अपना रास्ता नापो।


टैक्सी से नीचे उतरे तो अब कुत्ते को पैदल ले जाना मोटू-पतलू के लिए आसान नहीं था।
ऐसे लगता है, जैसे हम इसे अपने घर नहीं ले जा रहे हैं बल्कि यह हमें अपने घर ले जा रहा है।
इसका मतलब तो यह हुआ कि पट्टा अपने गले में बांधकर रस्सी इसके हाथ में दे दो।
जो जूते यह घिसवा रहा है, घर चल कर वह जूते इसके सर पर मारेंगे।
चलते-चलते वे घसीटा राम के घर के सामने से गुजरे तो वह मोटू-पतलू के पास कुत्ता देख कर उस पर लट्टू हो गया।
कहां से मारा है इतना शानदार कुत्ता ?
कुत्तों की नुमाइश से खरीदा है।
पूरे पांच हजार रुपये खर्चे हैं।
इतना महंगा, क्या है यह कुत्ता ?
पूरा खानदानी है। पी० डब्लू० डी० रजिस्टर्ड है। मतलब है के० सी० आई० रजिस्टर्ड है। पता है ट्रेनिंग दिए हुए पुलिस डाग की कीमत तो बीस-बीस हजार रुपये होती है। तुम इसे जितनी ट्रेनिंग दोगे इसकी कीमत उतनी ही बढ़ जायेगी।
तुम लो तो तुम्हें दो हजार का दे देंगे।
पांच हजार का कुत्ता तुम मुझे दो हजार में दे दोगे। घाटा उठा कर।
हाँ, तुम हमारे जिगरी यार जो ठहरे।
यह बात है तो सौदा हो गया। यह लो दो हजार रुपये और कुत्ता मुझे दो दो। अरे हाँ—नाम क्या है इसका ?
फंटूश।
फंटूश ! बड़ा प्यारा नाम है। यह तो एक फिल्म में देवानन्द का नाम था।
यह अब खुद देवानन्द बनकर तुम्हें फंटूश बना देगा।
कुत्ता लेने के बाद घसीटा राम ने फटाफट एक लम्बी चौड़ी योजना बना डाली थी। इसे ट्रेनिंग देकर पुलिस डाग बनाऊंगा। डिटेक्टिव फंटूस को जासूसी के गुरू सिखा कर खतरनाक अपराधियों का पता लगाऊंगा और इसे बीस पच्चीस हजार में बेचने की बजाये जासूसी के एक-एक केस की छानबीन करने के पचास-पचास हजार रुपये वसूल करूंगा। यह सोचकर घसीटा राम ने उसका मुंह चूम लिया।


और बदले में फंटूसने घसीटा राम का मुंह चाटा तो उसे दिन में तारे नजर आ गये।
मेरे मुंह को लालीपोप की तरह चाट रहा है। यह इंसानियत है तेरी।
अपनी इन्सानियत की तौहीन भला फंटूश कैसे बर्दाश्त कर सकता था।
अरे मैंने क्या भैंस खोल ली है तेरी जो इतना ताव खा रहा है।
बाप रे बाप, मुझे कराची के हलुवे की तरह खा जायेगा क्या?
अब घसीटाराम आगे-आगे था और फंटूश उसके पीछे-पीछे। पूरे कमरे में उसने घसीटा राम को लट्टू की तरह घुमा दिया था।
अबे मेरा शान्ति का प्रस्ताव स्वीकार कर ले। मेरी तौबा, मेरे बाप की तौबा जो तेरी शान में ज़रा भी गुस्ताखी करूं।
और अंत में जब फंटूश ने घसीटा राम का शान्ति प्रस्ताव स्वीकार किया तो हालत यह थी।
मेरा बैंड बजा दिया, फंटूश के बच्चे लगता है दो हजार रुपये देकर मैंने अपनी जान का दुशमन खरीदा है।
शोर शराबा सुन कर घसीटाराम की पड़ोसन वहां आ गई और कुत्ते के पट्टे से रस्सी खोल कर घसीटा राम की जान बचाने लगी।
तुम्हारा भला हो बहन जी।
दूधों नहाओ, पूतों फलो।


पर बहन जी अपने घर पहुंचीं तो पूत रो रहा था और फटूश दूधों नहा रहा था।
हे भगवान यह मुसीबत अब यहां आ गई।
मैं कोई घसीटा राम नहीं हूं जो मार खा जाऊंगी। मैं तो सर फाड़ दूंगी तेरा।
वास्तव में सर फाड़ दिया है। इसमें शक नहीं।
क्यों मुझे तरावड़ी के घाट मरवाने पर तुला है। दूध पीने वाले मजनू ले भूख लगी है तो यह खा ले।
क्या मतलब है, नहीं, नहीं खाता ! नखरे कर रहा है, यह भी कोई शराफत है कि तू लोगों का खाना खाये और मैं लोगों के जूते खाऊं।
फटूश की असली शराफत का घसीटा राम को तब पता चला जब वह खुद खाना खाने बैठा।
मेरे साथ मेरी थाली में खायेगा ? भगवान तेरा बेड़ा गर्क करे, दो हजार रुपये में अपनी मौत खरीद ली है मैंने।
खाने के बाद क्या अंगडाई ली है दुष्ट ने, मुझे अपना जूठा खाना भी नहीं खाने दिया।



चल अब कुछ ट्रेनिंग तो लेले फंटूश, चल ऐसे खड़ा हो जा । अपना सत्यानास करवा कर भी मैंने दो हजार रुपये का कुत्ता वीस हजार का बना दिया तो घाटे का सौदा नहीं रहेगा ।
क्या मतलब है ? कहना नहीं मानेगा ! कोई ट्रेनिंग नहीं लेगा । क्या कहा मैं तुझ पर हुक्म चला रहा हूं ! हां हां हुक्म चला रहा हूं । वह हड्डी मुंह में ले कर चल ।
देख ऐसे हड्डी मुँह में लेकर चल ।
क्या मतलब है, मैंने हड्डी मुँह में ली और तू टस से मस नहीं हुआ । अबे ओ नवाब के बच्चे, ट्रेनिंग मैं ले रहा हूं, या तू ले रहा है। चल अब इस रिंग में से छलांग लगा ।
चल अच्छा इस रिंग को पकड़, मैं बताता हूं छलांग कैसे लगाते हैं ।
हां पकड़े रहे ऐसे ही ।
ऐ…ऐसे लगाते हैं, छ…छ…।
छ…छ…छलांग ।





आगामी अंक में अपने इन प्रिय कलाकारों से फिर मिलिए।

धारावाहिक उपन्यास

# अनहोनी

7

लेखिका-संगीता

'म···म···मेरे पास इतने रुपये तो नहीं ···मैं घर टेलीफोन करके मंगवाती हूं।'

'घर टेलीफोन करने की क्या जरूरत है ?' गंगू दादा मुस्कराया, 'इतनी बड़ी गाड़ी जो खड़ी है।'

'क···क···क्या मतलब ?'

'मतलब अभी मालूम हो जाएगा।' गंगू ने अपने कुछ गुण्डों को संकेत किया, चलो बे···चारों पहियों के स्थान पर ईंटें लगाओ और चारों पहिए निकाल लो।'

म···म···मगर सुनिए तो···।'

'अगर मगर पानी में···।' गंगू लापरवाही से बोला, 'अधिक गड़बड़ की तो इंजन भी उतरवाकर ले जाऊंगा···तुम गंगू दादा को नहीं जानतीं।

पद्मिनी बेबसी से चारों ओर देखने लगी···दूसरे राहगीर एक-एक करके खिसक गए थे···केवल घायल बूढ़ा, गंगू और उसके साथी रह गए थे···गंगू दादा के गुंडे ईंटें ढूंढ़-ढूंढ़ कर लाने लगे। अचानक पीछे से नौजवान राहगीर पीठ पर गठरी लटकाए और पैकिट उठाए सामने आकर बोला—

'गंगू दादा···तुम्हें रुपयों से मतलब है तो रुपये ले लो···गाड़ी के पहिये क्यों निकालते हो ?'

'ऐ···चॉकलेट···।' गंगू दादा ने गुर्राकर कहा, 'तू कौन है बीच में बोलने वाला।'

'मैं तो भाई एक राहगीर हूं···न्याय की बात कर रहा हूं···मेम साहब घर टेलीफोन करके रुपये मंगवा रही हैं तो पहिये निकालने की क्या जरूरत है ?'

'तू अपना काम करता है या कुछ और चाहता है ?'

देखो गंगू दादा, नौजवान अपना सामान एक ओर रखकर बोला, 'अपन तो न्यायप्रिय हैं और न्याय ही चाहते हैं।'

कहते-कहते नौजवान राहगीर ने बूढ़े राहगीर की बांह पकड़कर एक झटके से उसे खड़ा कर दिया। बूढ़ा दोनों टांगों पर खड़ा हो गया···उसकी टांग या घुटने में खरोंच तक नहीं आई थी···फिर अचानक वह घुटना पकड़कर रोने लगा। नौजवान राहगीर ने मुस्कराकर कर कहा—

'क्यों गंगू दादा···तो यह धंधा है तुम्हारा ? इस बेचारी भोली-भाली लड़की को ठग लेना चाहते हो।'

'अबे तू जाता है या चटनी बनाऊं तेरी ?'

'अब तो अपन न्याय करके ही जाएंगे।' नौजवान मुस्कराकर बोला।

'देखता हूं तेरा न्याय···गंगू गुर्राया और अपने साथियों से बोला, 'चलो शुरू करो पहिये निकलना।'

'ऐ खबरदार।' पद्मिनी ने आगे बढ़कर गुस्से से कहा, 'किसी ने गाड़ी को हाथ लगाया तो हाथ तोड़ दूंगी।'




'इन कोमल हाथों से···?' गंगू व्यंग से बोला।

यह कहकर गंगू ने मुस्कराकर पद्मिनी की कलाई पकड़ ली। पद्मिनी के गले से हल्की-सी चीख निकल गई। नौजवान राहगीर ने नाक पर उंगली फेरकर कहा—

'यह तुमने अच्छा नहीं किया गंगू दादा ···अभी तक मामला जबानी ही सुलझ जाता लेकिन अपन एक शरीफ लड़की की कलाई पर किसी बदमाश का हाथ पसंद नहीं कर सकते···।'

'अबे जा···गीदड़ की औलाद।'

'तो फिर देखो अपन गीदड़ की औलाद हैं या शेर की ?'

अचानक नौजवान ने दोहत्तड़ बनाकर गंगू की कलाई पर मारा और उसके हाथ से पद्मिनी का हाथ छूट गया। पद्मिनी चीखकर पीछे हटके कार से लग गयी। गंगू गुर्राकर नौजवान पर झपटा···नौजवान ने झुककर गंगू को कंधे पर उठा लिया और कार की छत पर से दूसरी ओर उछाल दिया··· गंगू दादा पीछे गिरकर कराहा और उसके चारों गुंडे एक साथ नौजवान पर टूट पड़े लेकिन नौजवान ने बड़ी फुर्ती से उनको लातों और घूंसों पर रख लिया वह फिरकनी के समान नाच रहा था लेकिन किसी के हाथ नहीं लगता था···गंगू दादा भी संभलकर फिर लड़ने चला आया था। पद्मिनी की सहेलियां हक्का-बक्का खड़ी यह दृश्य देख रहीं थीं। थोड़ी ही देर में गंगू दादा के चारों साथी गधों के समान हांफने लगे थे

'अरे पुलिस···।' एक बदमाश चीखा।

'दादा भाग चलो···वरना पकड़ लिए जायेंगे।'

वह चारों गंगू दादा को लेकर भागकर गली में घुस गए···वह बूढ़ा जो टांग टूटने की एक्टिंग कर रहा था न जाने वह इस बीच में कहां गायब हो गया था। पद्मिनी और उसकी सहेलियां आश्चर्य से नौजवान को देखे जा रही थीं। नौजवान ने बड़े संतोष से अपना सामान और गठरी कार में रखी··· एक टैक्सी रुकवाई और पद्मिनी से बोला—

"देवीजी आप लोग टैक्सी में अपने घर जाइये···मैं आपकी गाड़ी ठीक कराके आपके घर पहुंचा दूंगा, घबराइये मत···मैं मैकेनिक हूं और सांताक्रूज़ में एक गैरिज में काम करता हूं।'

पद्मिनी एकाएक चौंक पड़ी जैसे सोते-सोते जाग उठी हो···फिर वह जल्दी से बोली—

'ओह···मैं···मैं···कैसे तुम्हारा धन्यवाद करूं।'

'बस-बस देवीजी···' नौजवान मुस्कराकर बोला, 'इस बात की आवश्यकता नहीं वरना मुझे भी फिल्मी डायलॉक बोलने पड़ेंगे ···यह तो मेरा कर्त्तव्य था।'

'वह···वह···वह···मैंने तुम्हारा कितना अपमान किया था···लेकिन तुमने···।'

'देवीजी···वह अपमान थोड़े ही था।' नौजवान हंस 'ऐसी छोटी-मोटी लड़ाइयां तो आदमी के जीवन में आती रहनी चाहिएं इससे रक्त संचालन ठीक रहता है।'

फिर उसने अपने गैरिज का पता लिखकर पद्मिनी को दिया और उसके घर का पता ले लिया। पद्मिनी अपनी सहेलियों के साथ टैक्सी में सवार हो गई और नौजवान

कार स्टार्ट करने का प्रयत्न करने लगा। टैक्सी सड़क पर दौड़ने लगी और पद्मिनी खिड़की से लगी उस समय तक नौजवान को देखती रही जब तक वह दिखाई देता रहा। नौजवान अपने ध्यान में कार का बोनट खोलकर इंजन के कुछ पुर्जों को देख रहा था।

टैक्सी बंगले के कम्पाउंड में पहुंचकर पोर्टिको में रुक गई''पद्मिनी ने उतरकर किराया चुकाया तभी फाटक में सेठ साहब की कार प्रविष्ट हुई। टैक्सी राउंड लेकर बाहर चली गई और सेठ साहब की कार पोर्टिको में आ गई। पद्मिनी उनकी कार देखकर रुक गई थी। सेठ साहब को उतरते वह खुश होकर हाथ हिलाती हुई बोली—

'हाय डैडी'''।''

'हाय बेटी'''।' सेठ साहब उसकी ओर देखकर आश्चर्य से बोले, 'लेकिन यह क्या बेटी'''तुम टैक्सी में क्यों आई? तुम्हारी कार कहां है?'

'ओ डैडी'''आज तो कार के कारण एक बहुत बड़ा एडवेंचर हो गया।

'एडवेंचर? क्या मतलब?'

'अरे डैडी'''अभी प्रैक्टिस पूरी नहीं हुई ना'''इसलिए'''।'

'क्या एक्सीडेंट कर दिया किसी से?' सेठ साहब ने घबराकर पूछा।

'ओ'''नो'''डैडी'''ओ'''यस'''बट''' नॉट'''।'

'क्या'''नो'''यस'''नॉट लगा रही हो? सच-सच बताओ बेटी क्या हुआ?'

पद्मिनी ने कार की सारी घटना सेठ जी को सुनाई और बड़े उत्साह से बोली—

'ओ डैडी'''क्या फुर्तीला नौजवान था, वह क्या हाथ दिखा रहा था'''यूं घूंसा घूमता यूं लात चलाता'''और डैडी'''उसका कोई वार खाली नहीं जाता था'''वह जो आपने शायद कोई फिल्म जेम्स बांड की देखी होगी'''उसमें आपने हीरो को देखा होगा ना'''।'

'हां हां तुमने बलपूर्वक एक फिल्म दिखा दी'''थंडर बाल।'

'बस डैडी'''बिल्कुल उसी हीरो के समान सच'''मानिए'''उसने एक भी चाँटा तक नहीं खाया और चारों को चंद मिनट में ही चित्त कर दिया'''और फिर डैडी जानते हैं उस साहसी नौजवान ने आखिर में क्या कहा? इससे उसका महान् चरित्र झलकता है।'

'क्या कहा बेटी'''?' सेठ साहब ध्यान से पद्मिनी को देखते हुए बोले।

'ओ डैडी'''उसने गुंडे का हाथ पीछे मरोड़कर कहा, 'अब मैं तुम्हें ऐसी सजा देता हूं कि आयंदा जीवन भर तुम किसी शरीफ लड़की की कलाई पकड़ने का साहस न करोगे'''और डैडी यह कहकर उसने झटके से गुंडे के कंधे की हड्डी उतार दी।'

'अच्छा'''!' सेठ साहब ने आंखें फाड़कर कहा।

'हाँ डैडी'''।' पद्मिनी ने उत्तजित होकर कहा, 'मुझे तो ऐसे लगा जैसे मैं किसी काल्पनिक फिल्मी हीरो के सामने खड़ी हूं।'

'मगर बेटी वह था कौन? उसका नाम क्या था?'

'नाम'''!' पद्मिनी सिर खुजलाकर बोली, 'मैं उसका नाम मालूम करना तो भूल ही गयी?'

'पता भी मालूम नहीं किया?'

'हां, पता तो बताया था उसने।'

'वाह'''यह कैसे हो सकता है डैडी?'

'बेटी'''कहीं तुम धोखा तो नहीं खा गई?'

'क्या मतलब?'

'हो सकता है कोई धोखा देकर गाड़ी ही ले उड़ा हो—बाहर बम्बई से कहीं दूर—ऐसे चार सौ बीस तो यहां कदम-कदम पर मिलते हैं, सम्भव है वह उन बदमाशों से भी मिला हो।'

'ओ गॉड'''तब तो गड़बड़ हो गई डैडी'''।'

इतने में बरामदे में मे शोभना की आवाज आई—

'अरे तुम लोग यहां क्या बातें करने खड़े हो गए?'

'अरे मां'''तुम बाहर क्यों आ गईं?'



'कौन से सेठ का बेटा है?'

'सेठ-वेठ का बेटा नहीं है डैडी, वह बेचारा तो एक साधारण मैकेनिक है।'

'मैकेनिक?' सेठ साहब उछल पड़े।

'हां डैडी'''वही तो कार ले गया है''' कह गया है कि ठीक कराके घर पहुंचा देगा।'

'कौन से गैरिज में काम करता है?'

पद्मिनी ने गैरिज का पता बताया तो सेठ साहब उछल पड़े और बोले—

'अरे भई'''इसी गैरिज में तो हमारी सारी गाड़ियां ठीक होने जाती हैं।'

'अच्छा'''!!' पद्मिनी ने आश्चर्य से कहा।

'तब तो हम उसे जरूर जानते होंगे''' क्या हुलिया था उसका?'

पद्मिनी ने हुलिया बताया तो सेठ साहब ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा—

'इस हुलिए का तो कोई भी मैकेनिक उस गैरिज में नहीं है।'

'मैं इतनी देर पहले दो-दो गाड़ियों की आवाज सुन चुकी थी'''लेकिन अंदर आने का कोई नाम भी नहीं लेता था'''सोचा बाहर जाकर पता तो करूं।''

पद्मिनी ने झट आगे बढ़कर शोभना के हाथ से छड़ी ले ली और उनका हाथ अपने कंधे पर रख लिया। सेठ साहब ने कहा—

'चलो बेटी'''मैं गैरिज को फोन करके पूछता हूं'''।'

'किस बात का फोन?' शोभना ने पूछा।

पद्मिनी शोभना को सहारा देकर अंदर ले जाती हुई उसे सारी बात सुनाने लगी। सेठ साहब ने रिसीवर उठाकर गैरिज का नम्बर डायल किया और कान से रिसीवर लगाकर खड़े हो गए। कुछ क्षण बाद दूसरी ओर से आवाज आई—

'यस लिबर्टी गैरिज?'

'कौन बोल रहा है?'

'मैं शास्त्री हूं—आप कौन हैं?'

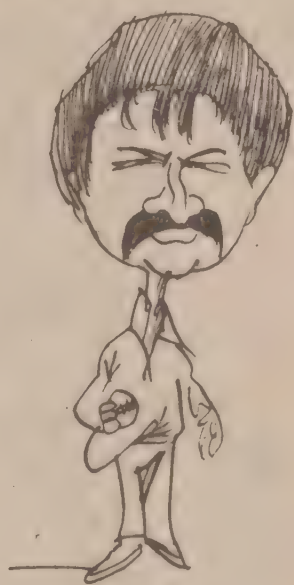
शेष पृष्ठ 30 पर

# पाक क्रिकेटरों के व्यंग्यचित्र

हम यहां पाक क्रिकेट खिलाड़ियों के व्यंग्य चित्र छाप रहे हैं। क्या आप इन्हें केवल इनके कार्टून देख सकते हैं ? कोशिश करके पहचान देखिए और उनके नाम का के नीचे पेंसिल या पेंसिल लिखिए ? क्रमवार सही प चय उत्तर पृष्ठ नं.३५ पर छ हैं। मिलाकर देख लीजिए



१



२



३



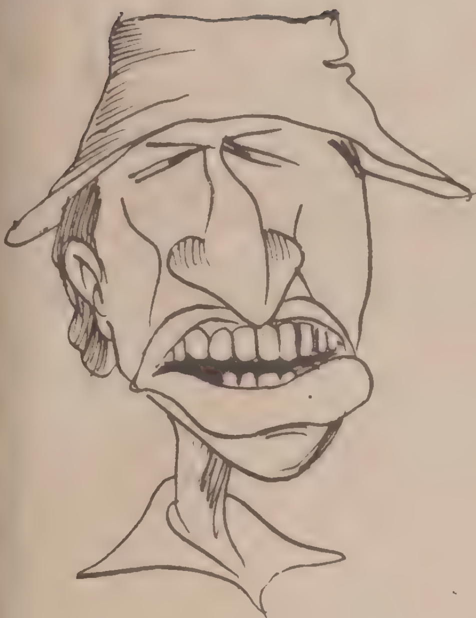
४



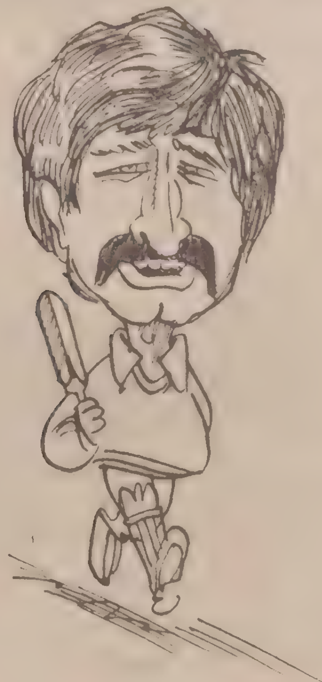
५



६



৭



৮



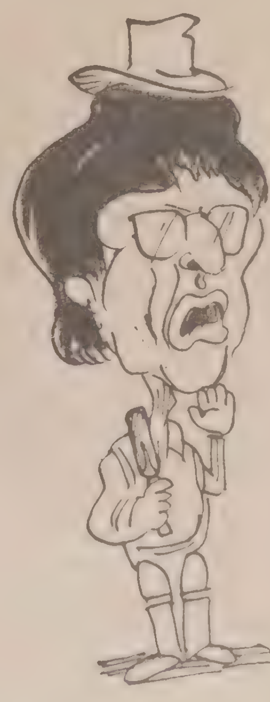
৯



১০



১১



১২



# आपस की बातें

चचा वातूनी की कलम दवात से

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें ।

**उमेश ज्ञानचंदानी, 'प्रेमी', बिलासपुर** : आए दिन हमारे यहां नेताओं के साथ दुर्घटनायें होती रही हैं, पर उनका बाल भी बांका नहीं होता, यह दुर्भाग्य है या सौभाग्य ?

उ० : यह क्या बात कही आपने ? राजनारायण की दाढ़ी के तो सारे ही बाल बांके हो गये हैं, दुर्भाग्य उस गाड़ी का था जिसमें वह पिछले दिनों बैठे थे और एक दुर्घटना में वह चूर-चूर हो गई थी ।

**केवल प्रकाश दुआ, काशीपुर** : दीवाना इतनी सुस्त रफ्तार से क्यों चल रहा है ?

उ० : आपकी उत्सुकता को बढ़ाने के लिए, पर घबराइये नहीं, अब इसकी रफ्तार तेज होने वाली है ।

**बजरंग शर्मा, श्रीगंगानगर** : चाचा जी, प्यार वास्तव में क्या बला है ?

उ० : इस एक शेर से अनुमान लगा लीजिये :

हम इन्तजारे यार में जागे तमाम रात,
अच्छे-भले थे इश्क ने उल्लू बना दिया ।

**चन्द्रभान 'अनाड़ी', जबलपुर** : चाचा जी इन्सान का जीवन से क्या रिश्ता है ?

उ० : वह रिश्ता जो न चाहते हुए भी निभाया जाता है : इसके लिए एक शायर ने कहा है :

ये जानते हुए भी कि तू बावफा नहीं,
ऐ उम्र तेरा साथ दिये जा रहा हूं मैं ।

**रिजवान खान, रांची** : अंकल जी, इंसान को अपनी गलती का एहसास कब होता है ?

उ० : बाबू जगजीवनराम, चौधरी चरण सिंह और श्री देव राज अर्स को अपनी-अपनी गलतियों का कभी एहसास नहीं होता, तो आम इन्सान को क्या होगा ? हम तो यह कहेंगे कि आजकल भगवान की फैक्ट्री से जिस प्रकार के इन्सान बना कर हमें सप्लाई किये जा रहे हैं, उन्हें देखकर एक दिन भगवान को ही अपनी गलती का एहसास करना होगा ।

**मदनकिशोर होतवानी, 'मयूर', रायपुर** : चाचा जी प्यार करने से पहले मनुष्य को क्या करना चाहिए ?

उ० : अस्पताल और शमशान घाट के आस-पास रहना चाहिए, ताकि उठाने वालों को अधिक कष्ट न हो ।

**प्रदीप संगम, नई दिल्ली** : चाचा जी, आपने अपनी प्रेमिका को पहली बार कब देखा था ?

उ० : जब हमारी उम्र चाँद तारों के सपने देखने की थी, अब वह हमारी श्रीमती जी हैं और उन्हें देखकर हमें दिन में तारे नजर आ जाते हैं ।

**कुक्कू, पप्पी, पालमपुर** : आदमी जिन्दगी से ऊब जाए तो उसे क्या करना चाहिए ?

उ० : जिन्दगी में जिन्दा दिली लाने के लिए दीवाना पढ़ना चाहिए ।

**अशोक जौहर, देहरादून** : चाचा जी, आजकल चिल्ली ने प्रेम पत्र लिखना क्यों बन्द कर रखा है ? क्या वह किसी आयोग के चक्कर में फंस गया है ?

उ० : आयोग के दुरुपयोग का चक्कर चलाने वाले तो आजकल खुद घनचक्कर बने हुए हैं । चिल्ली उनके जनाजे का तमाशा देखने में लग रहा है ।




**चन्द्र शेखर गोस्वामी, हरिद्वार** : पाठकों के फोटो छापने के बाद क्या आप उनके ब्लाक उन्हें लौटा देते हैं ?

उ० : हम फोटो के ब्लाक नहीं बनाते, फोटो आफसैट द्वारा छापते हैं ।

**रवि भाटिया, शंकर रोड मार्किट, दिल्ली** : कहते हैं, मर्दों से औरतें अधिक अच्छी ड्राइविंग करती हैं । क्या इसका मतलब यह नहीं हुआ कि यदि लड़कियां टैक्सी चलाने लगें तो यातायात की बहुत सी असुविधायें घट जायेंगी ?

उ० : जी हां, असुविधायें घट जायेंगी और एक्सीडेंट बढ़ जायेंगे ।

**शिवन लाल खत्री, रायपुर** ; ईंट से ईंट मिले तो घर बनता है, दिल से दिल मिले तो•••?

उ० : तो पहले घर बनता है, फिर सिर पर ईंट पड़ती है ।

**शीतल दास, अमरावती** : मैं घसीटा राम से मिलना चाहता हूं, कृपया उनका पता बताइये ?

उ० : दीवाना कार्यालय में आकर उनसे मिल लीजिए, टेढ़े आदमी से मिलने का यह सीधा सा पता है ।

**लखमी चन्द माघवानी, मैसूर** : चाचा जी क्या आप कृपया यह बताने का कष्ट करेंगे कि आपका वजन कितना है ?

उ० : कभी तोल कर नहीं देखा, हां इतना पता है कि हम दुनिया से उठे तो धरती का कोई खास वजन कम नहीं होगा ।

**विद्या प्रसाद जमशेदपुर** : क्या यह सत्य है वेताल जीता जागता आदमी है ?

उ० : उनके लिए जो दीवाना में उसे हर सप्ताह जीता जागता देखते हैं ।

**निन्दी वीना सोनिया, कपूरथला** : आप चाची का मनोरंजन किस प्रकार करते हैं ?

उ० : उस भानमति को अपनी जेब में हाथ देने की अनुमति देकर, पर यह मनोरंजन महीने में एक ही बार हो पाता है ।

**दीन दयाल शर्मा, मेरठ** : दुनिया बनाने वाला अपनी आज की दुनिया को देख कर क्या सोचता होगा ?

उ० : इसके लिए एक शेर अर्ज है :

दुनिया बनाके अपनी इस दिलचस्प भूल पर,
होता तो होगा शर्म से पानी कभी-कभी ।

**हरगुण जसवन्ती, मन्डला** : चाचा जी, भिखारी भगवान के नाम पर भीख क्यों मांगता है ?

उ० : क्योंकि भगवान संजय गांधी और जगदीश टाइटलर की तरह यह नहीं कहता कि इसे मेरे नाम पर भीख मत देना ।

**रवीश कुमार रायपुर** : डीयर अंकल, आप अपने दांत क्या किसी खास टुथब्रुश से साफ करते है ?

उ० : जी नहीं, ब्रुश चाहे कैसा भी हो, हमारे दांतों से रगड़ खा कर साफ हो जाता है ।

**गोपल सिंह, अलवर** : जितना हम आपको याद करते हैं, क्या आप भी हमें उतना याद करते है ?

उ० : जी नहीं क्योंकि हम आपके दुश्मन नहीं हैं, जो हमें याद करते हैं उनके लिए शायर ने कहा है—

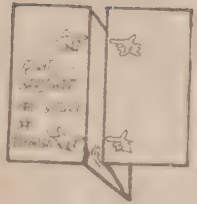
मुझे याद करने से ये मद्दाआ था,
निकल जाये जां हिचकियां आते आते ।

**श्याम माहेश्वरी, अशोक, फारबिसगंज** : चचा जान, कृपया यह बतायें कि यादगार कारागार कब बन जाती ।

उ० : जब कोई और मद्दगार न रहे ।

**आपस की बातें**
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुर शाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

# दीवाने कार्ड को मोड़कर देखिये



दोनों अंगुलियों को आपस में मिलाइये



१९७७ मे मतदाताओं ने घुटन से तंग आकर आपातकाल के जहाज से छलांग मारी ! सोचा था लोकतंत्र के बगीचे में स्वयं को पायेगा लेकिन दुर्भाग्य वश वह रेगिस्तान के कैकटस जंगल में आ गिरा। चारों ओर महंगाई, अस्थिरता, अराजकता, लूटमार, हड़ताल, नौकरशाही, निकम्मापन, नशाबन्दी, फूट और आपसी सिर फुटव्वल के कंटीले पौधे खड़े थे। छुटकारे की कोई सूरत नजर नही आती थी। काफी सोच-विचार के बाद उसने हल निकाल ही लिया। पृष्ठ मोड़ कर देखें क्या हल निकला ?

# खेल खेल में

## भारत पाक क्रिकेट टैस्ट
### आंकड़ों की नज़र से

छः टैस्ट मैचों की श्रृंखला खेलने के लिये पाकिस्तान भारत का दौरा कर रहा है। इससे पहले पाकिस्तान और भारत के बीच ४ टैस्ट श्रृंखलाओं में १८ टैस्ट मैच खेले गए। भारत और पाकिस्तान के बीच बने रिकार्ड्स का विवरण नीचे दिया जा रहा है :

| | | भारतीय | पाकिस्तानी | टैस्ट | भारत | पाकिस्तान | बराबर |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वर्ष | स्थान | कप्तान | कप्तान | मैच | विजय | विजय | |
| १९५२ | भारत | ल०अमरनाथ | कारदार | ५ | २ | १ | २ |
| १९५४-५५ | पाकिस्तान | ल०अमरनाथ | कारदार | ५ | — | — | ५ |
| १९६०-६१ | भारत | कान्ट्रेक्टर | फ०महमूद | ५ | — | — | ५ |
| १९७८ | पाकिस्तान | बेदी | मुश्ताक | ३ | — | २ | १ |
| | योग | | | १८ | २ | ३ | १३ |

## टैस्ट विजय :

**भारत (२)**

(१) एक पारी और ७० रन से, पहला टैस्ट, दिल्ली में, १९५२।

(२) १० विकेट से, चौथा टैस्ट, मद्रास में, १९५२।

**पाकिस्तान (३)**

(१) एक पारी और २३ रन से, दूसरा टैस्ट, लखनऊ में, १९५२।

(२) ८ विकेट से, दूसरा टैस्ट, लाहौर, १९७८

(३) ८ विकेट से, तीसरा टैस्ट, कराची, १९७८।

**उच्चतम स्कोर :**

भारत : ९ विकेट पर ५३९ रन, चौथा टैस्ट मद्रास १९६०-६१।

पाकिस्तान : ६ विकेट पर ५३९ रन, दूसरा टैस्ट, लाहौर १९७८।

**निम्नतम स्कोर :**

भारत : १०६ रन, दूसरा टैस्ट, लखनऊ १९५२।

पाकिस्तान : १५० रन, पहला टैस्ट, दिल्ली १९५२।

**उच्चतम व्यक्तिगत स्कोर :**

भारत : १७७ रन (अविजित), चन्दु बोर्डे द्वारा, चौथा टैस्ट, मद्रास १९६०-६१

पाकिस्तान : २३५ रन, (अविजित), जहीर द्वारा, दूसरा टैस्ट, लाहौर १९७८।

**श्रृंखला में अधिकतम व्यक्तिगत रन :**

भारत : ४४७ रन, गावस्कर द्वारा, तीन टैस्ट मैचों में १९७८।

पाकिस्तान : ५८३ रन, जहीर द्वारा, तीन टैस्ट मैच में १९७८।

## नवर्स नाइनटीस के शिकार :

**भारत (४)**

(१) ९२ रन, एन० कान्ट्रेक्टर द्वारा, पाचवां टैस्ट, दिल्ली, १९६०-६१।

(२) ९३ रन, सी० चौहान द्वारा, दूसरा टैस्ट, लाहौर, १९७८।

(३) ९७ रन, गवास्कर द्वारा, दूसरा टैस्ट, लाहौर, १९७८।

(४) ९९ रन, जय सिम्हा द्वारा, दूसरा टैस्ट, कानपुर, १९६०-६१।

**पाकिस्तान (५)**

(१) ९३ रन, एच० कारदार द्वारा, पांचवां टैस्ट करांची, १९५४-५५।

(२) ९६ रन, हनीफ मोहम्मद द्वारा, तीसरा टैस्ट, बम्बई, १९५२-५३।

(३) ९६ रन, जहीर अब्बास द्वारा, पहला टैस्ट फैसलाबाद, १९७८।

(४) ९७ रन, विकार हसन द्वारा, पांचवा टैस्ट, कलकत्ता, १९५२-५३।

(५) ९९ रन, मकमूद अहमद द्वारा, पांचवा टैस्ट करांची, १९५४-५५।

**एक पारी में अधिकतम विकेट**

भारत : ८ विकेट ५२ रन पर, वीनू मानकड़ द्वारा, पहला टैस्ट नई दिल्ली १९५२-५३।

पाकिस्तान : ७ विकेट ५२ रन पर, फजल महमूद द्वारा, दूसरा टैस्ट लखनऊ १९५२-५३।

**एक मैच में अधिकतम विकेट :**

भारत : १३ विकेट १३१ रन पर, वीनू मानकड द्वारा, पहला टैस्ट, नई दिल्ली, १९५२-५३।

पाकिस्तान : १२ विकेट ९४ रन पर, फजल महमूद द्वारा, दूसरा टैस्ट लखनऊ, १९५२-५३।

**एक श्रृंखला में अधिकतम विकेट :**

भारत : २५ विकेट (२०.५६ औसत), वीनू मानकड़ द्वारा, १९५२-५३।

पाकिस्तान : २२ विकेट (१५.८६ औसत,) खान मोहम्मद द्वारा, १९५४-५५।

**व्यक्तिगत शतक :**

**भारत (११)**

(१) १७७ रन, चन्दु बोर्डे द्वारा, चौथा टैस्ट मद्रास, १९६०-६१।

(२) १४६ रन, विजय हजारे द्वारा, तीसरा टैस्ट बम्बई, १९५२-५३।

(३) १४५ रन, जी० विश्वनाथ द्वारा, पहला टैस्ट फैसलाबाद, १९७८।

(४) १३७ रन, सुनील गावस्कर द्वारा, तीसरा टैस्ट करांची, १९७८।

(५) ११७ रन, पी० आर० उम्रीगर द्वारा, चौथा टैस्ट मद्रास, १९६०-६१।

(६) ११५ रन, पी० आर० उम्रीगर द्वारा, दूसरा टैस्ट कानपुर, १९६०-६१।

(७) ११२ रन, पी० आर उम्रीगर द्वारा, पांचवा टैस्ट, दिल्ली, १९६०-६१।

(८) १११ रन, सुनील गावस्कर द्वारा, तीसरा टैस्ट करांची, १९७८।

(९) ११० रन, डीपक शोधन द्वारा, पाचवां टैस्ट, कलकत्ता, १९५२-५३।

(१०) १०८ रन, पी० आर० उम्रीगर द्वारा चौथा टैस्ट पेशावर, १९५४-५५।

(११) १०२ रन, पी० आर० उम्रीगर द्वारा बहावलपुर टैस्ट, १९५४-५५।

**पाकिस्तान (१३)**

(१) २३५ रन, जहीर अब्बास द्वारा, दूसरा टैस्ट लाहौर, १९७८।

(२) १७६ रन, ज़हीर अब्बास द्वारा, पहला टैस्ट फैसलाबाद, १९७८।

(३) १६० रन, हनीफ मौहम्मद द्वारा, पहला टैस्ट बम्बई, १९६०-६१।

(४) १५४ जावेद मियांदाद द्वारा, पहला टैस्ट फैसलाबाद, १९७८।

(५) १४२ रन, हनीफ मौहम्मद द्वारा, दूसरा टैस्ट बहावलपुर, १९५४-५५।

(६) १३५ रन, इम्तियाज अहमद द्वारा, पहला टैस्ट बम्बई, १९६०-६१।

(७) १२४ रन, नजर मौहम्मद द्वारा दूसरा टैस्ट लखनऊ, १९५२-५३।

(८) १२१ रन, सईद अहमद द्वारा, पहला टैस्ट बम्बई १९६०-६१।

(९) १०४ रन, आसिफ इकबाल द्वारा, पहला टैस्ट फैसलाबाद, १९७८।

(१०) १०३ रन, अलीम उद्दीन द्वारा, पांचवा टैस्ट करांची, १९५४-५५।

(११) १०३ रन, सईद अहमद द्वारा, चौथा टैस्ट मद्रास, १९६०-६१।

(१२) १०१ रन, मुश्ताक मौहम्मद द्वारा, पाँचवां टैस्ट दिल्ली, १९६०-६१।

(१३) १०० रन, जावेद मियाँदाद द्वारा, दूसरा टैस्ट कराची, १९७८।

— तारिक

**खेल-खेल में**
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

# फैण्टम - जंगल शहर



बदमाश नकाबपोश के लिए जाल फैलाए हुए।
डर की जगह चेहरे पर प्रेम भाव लाओ।
अ··· हां ?
यह संकेत कैसा ?
मॉक्स की सीटी है !
मॉक्स अगर वो आज नहीं दिखा तो ?
तब तक हम कोशिश जारी रखेंगे, तो जरूर दिखेगा !
आज फिर पार्क में जा रहे हैं।
मुझे इस वक्त जंगल में होना चाहिए, क्या करूं कुछ ही रातें बाकी हैं डेव के लुटेरों को ढूंढ़ने के लिए।
मुझे फिक्र रहती है, अपना ध्यान रखा करो···।
मुझे कुछ नहीं होगा।
आज रात फिर बाहर ? क्या मामला है ?
उसे कुछ लोगों से मिलना है मां !
काश ! वह उन्हें पहले देखे !
कल···पार्क।
छुपे हुए लुटेरे नकाबपोश की इन्तजार में।
तेज जंगली नजरों से जांच···
ये सब किसका इन्तजार कर रहे हैं ? शिकार का ?
अच्छा···अब···।
जरा होश में, याद रहे ये सिर्फ दिखावा है !
रात में पार्क···एक
हम चलकर इसे सच्चाई का रूप देते हैं !
हाँ ? ठीक है।
अ-अह बचाओ !
और तेज



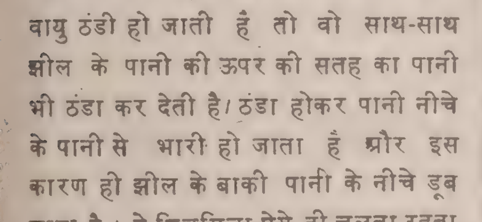
इसे वास्तविक ही दिखाना होगा !
जोर से···मैं ही तुम्हें मुश्किल से सुन रहा हूं ।
ज्यादा ही वास्तविक है ।
ओह !
बचाओ··· बचाओ ।
यह जिन्जर है, अच्छा नाटक कर रही है !
जैसे ही नकाबपोश दिखाई देगा माक्स की सीटी सुनाई देगी ।
बचाओ-! बचाओ
?!
पार्क में लुटेरों का जाल···।
चिल्लाती रहो !
बचाओ···मदद करो···।
झगड़े को सच्चा दिखाने की कोशिश करो ।
वह··· आया···।
वो. री. हो ई ई ई

# क्यों और कैसे

**प्र० : नदियों, झीलों और तालाबों में पानी पहले ऊपर क्यों जमता है, तथा पानी से बर्फ कैसे बनती है ?**

उ० : यदि आपने नदी, झील अथवा तालाबों को जमे हुए देखा है तो ये अवश्य जानते होंगे की सबसे पहले इनकी ऊपरी सतह पर ही बर्फ की चादर जम जाती है। क्या आपने कभी सोचा है कि यदि झील, तालाब तथा नदियों का पानी पहले ऊपर के बजाये नीचे से जमना आरम्भ होता तो इसका हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता। इसका प्रभाव जीवन की कई मुख्य बातों पर पड़ता तथा वो आज से भिन्न होतीं। इससे न केवल संसार की जलवायु बदल जाती अपितु पानी में रहने वाले कई प्रकार के जीव-जन्तु कतई नष्ट हो जाते।

ये देखते हैं कि झील का पानी बर्फ में कैसे बदलता है ? जब झील के ऊपर की वायु ठंडी हो जाती है तो वो साथ-साथ झील के पानी की ऊपर की सतह का पानी भी ठंडा कर देती है। ठंडा होकर पानी नीचे के पानी से भारी हो जाता है और इस कारण ही झील के बाकी पानी के नीचे डूब जाता है। ये सिलसिला ऐसे ही चलता रहता है जब झील के सारे पानी का तापमान लगभग ३९ डिगरी फेरनहीट पर पहुंच जाता है। परन्तु झील से बाहर तापमान अभी भी कम होता जा रहा है। झील के ऊपर की सतह के पानी का तापमान ३९ डिगरी से कम हो जाता है, परन्तु अब ये ऊपर का पानी झील के नीचे डूबता नहीं क्योंकि ३९ फेरनहीट से अधिक ठंडा होने पर हल्का हो जाता है, और इस प्रकार झील के ऊपर की सतह का पानी जमने के लिए तैयार हो जाता है। तापमान ३२




डिगरी फेरनहीट या इससे अधिक होते ही बर्फ के नन्हें-नन्हें क्रिस्टल बनने लग जाते हैं। हर इन क्रिस्टलों के छः रे या पोंइट होते हैं। ये क्रिस्टल एक दूसरे से जुड़ कर बर्फ में बदल जाते हैं। और झील की सतह पर बर्फ की चादर जम जाती है।

बर्फ कभी कभी साफ तथा कभी-कभी धुंधली होती है। ऐसा क्यों होता है ? इसका कारण है कि हर पानी की बूंद जमने पर हवा का छोटा से बुलबुला छोड़ती है जो कि बर्फ के क्रिस्टल की बाहों में चिपक जाता है। क्रिस्टल बनते तथा जुड़ते जाते हैं तथा बाहों में चिपके हवा के बुलबुले इनमें फंस जाते हैं। ऐसे जमी बर्फ धुंधली दिखाई देती है। परन्तु यदि बर्फ के नीचे का पानी हिल रहा हो तो, हवा के नन्हें बुलबुले साफ बर्फ में इकट्ठे हो जाते हैं।

पानी कुछ ऐसे तत्वों में से एक है जो तरल से ठोस बनने पर सिकुड़ते नहीं। पानी जम कर बर्फ बनने पर १/९ वां हिस्सा अधिक हो जाता है। उदाहरण के लिए ९




लिटर पानी से हमें १० लिटर बर्फ प्राप्त होती है। इसी कारण बहुत अधिक सर्दी पड़ने से जब पाइपों या मोटर के रेडियेटर इत्यादि में बर्फ जम जाती है तो वो फट जाते हैं। क्योंकि बर्फ पर जमे हुए पानी को अधिक स्थान की आवश्यकता होती है।

**प्र० : रेगिस्तान सूखे क्यों होते हैं ? तथा ये कितने प्रकार के होते हैं ?**

उ० : रेगिस्तान वो स्थान होते हैं। जहां केवल विशेष प्रकार का जीवन ही सम्भव होता है। सब रेगिस्तानों में नमी की कमी होती है जिसके कारण लगभग पानी के बिना जीवित रह पाने वाला जीवन ही इन स्थानों में पाया जाता है। वनस्पति जीवन अधिकतर वर्षा पर ही निर्भर होता है। उदाहरण के लिए अधिक वर्षा क्षेत्रों में जंगल उगते हैं, थोड़ी वर्षा के स्थानों में केवल हरियाली ही उग पाती है परन्तु बहुत कम वर्षा के स्थानों में रेगिस्तान में पाये जाने वाले विशेष प्रकार के पौधे ही उग पाते हैं।

अफरीका का सहारा रेगिस्तान भूमध्य रेखा के निकट स्थिति है। ये अल्पउष्ण कटिबन्धी क्षेत्र है इस क्षेत्र में हवा नीचे की ओर बैठती है तथा बैठते समय अधिक गर्म और शुष्क हो जाती है। इन क्षेत्रों की भूमि समुद्र के पास होने पर भी शुष्क है। उत्तर पश्चिमी अफरीका तथा पश्चिमी आस्ट्रेलिया के रेगिस्तानों की भूमि भी ऐसी ही है।

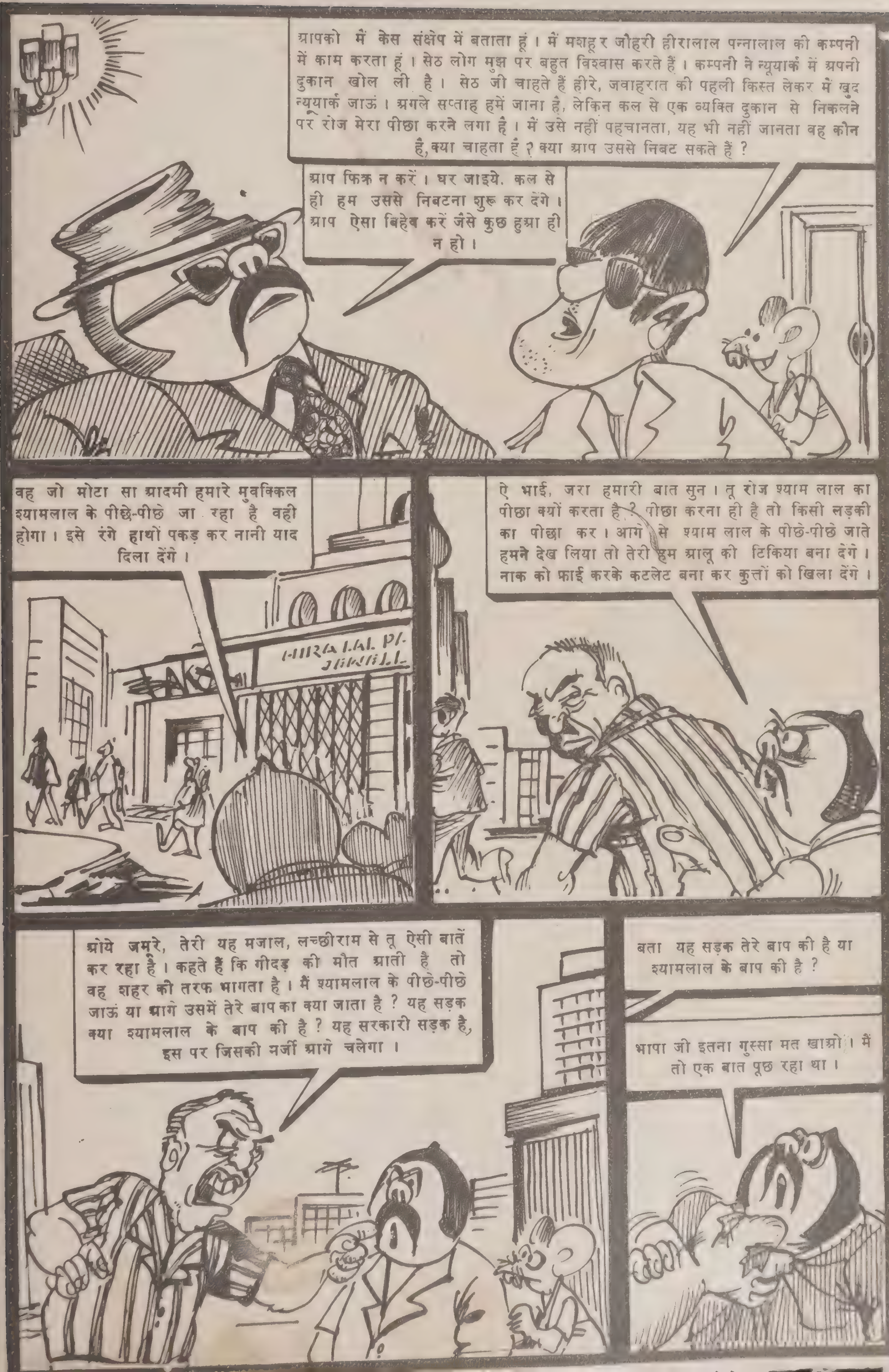
भूमध्य रेखा से दूर के क्षेत्रों में पाये जाने वाले रेगिस्तान अधिकतर इन क्षेत्रों की समुद्र की दूरी, नम हवा तथा इनके पास के पर्वतों के कारण बनते हैं। पहाड़ों की दीवार इन नम हवाओं से टकराती है। इसके फलस्वरूप वर्षा पहाड़ों के समुद्र की ओर वाले हिस्सों पर होती है तथा इसके दूसरी ओर के भागों की भूमि सूखी रह जाती है। इसे 'वर्षा की छाया' का प्रभाव कहा जाता है। मध्य एशिया के रेगिस्तान हिमालय तथा तिब्बत के पहाड़ों के 'वर्षा छाया' प्रभाव के भाग में हैं।

हर रेगिस्तान देखने में भिन्न होता है। अधिक रेत वाले रेगिस्तानों में हवा से रेत के टीले बन जाते हैं, इन रेगिस्तानों को रेतीले रेगिस्तान कहते हैं। इसके अलावा पहाड़ी रेगिस्तान भी होते हैं। इन क्षेत्रों में अधिकतर सूखी चट्टानें ही पाई जाती हैं जो पहाड़ियों या सूखे ऊबड़ खाबड़ मैदान के रूपों में दिखाई देते हैं। इनसे भी अलग किस्म के रेगिस्तान सूखी पथरीली चट्टानों से बने होते हैं। इन क्षेत्रों की सारी बारीक मिट्टी तेज हवायें उड़ा कर ले जाती हैं तथा केवल सूखे मैदान जिन्हें 'रेगिस्तान की पटरी' कहा जाता है दिखाई देते हैं। ऐसे रेगिस्तानी क्षेत्र उत्तर पश्चिमी अमरीका में पाये जाते हैं।

लगभग सभी रेगिस्तानों में कुछ न कुछ पशु तथा वनस्पति जीवन पाया जाता है। रेगिस्तान में पाये जाने वाले पौधों में कोई पत्ते नहीं होते ताकि इनके भीतर की नमी नष्ट न होने पाये। इसके अतिरिक्त इनमें तेज कांटे भी होते हैं ताकि पशु इन्हें न खायें। रेगिस्तान में रहने वाले पशु भी लम्बे समय तक बिना पानी के जीवित रह लेते हैं तथा अपनी आवश्यकता का पानी ओस तथा पौधों से ही प्राप्त कर लेते हैं।

**क्यों और कैसे ?**
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२


पन्नालाल
सिलबिल पिलपिल,
लेह कबाड़ा हो गिया। जब से जासूसी दफ्तर का भार थमने रुबी पर डाल दिया तब से दफ्तर का रास्ता ही भूल गये। कभी दफ्तर की तरफ मुंह तक नहीं किया, अब तुमको इसका फल भुगतना पड़ेगा।
रुबी एक महीने की छुट्टी पर गयी है। पिलपिल इलेक्शन के सिलसिले में गाम गया है। इब दफ्तर हमीं दोनों को जाना पड़ेगा।
क्यों क्या हुआ, सीताफल का भाव चढ़ गया बाजार में ?
अभी चलते हैं, इसमें घबराने की क्या बात है ?
हमने आपके मूंगफली के खेतों में पिछले साल जो चूहे पकड़े थे उसके बिलों का भुगतान अभी तक नहीं हुआ। बड़े अफसोस की बात है। हमने रूस और चीन वालों के जासूसी का कांट्रेक्ट छोड़कर आपका काम किया था उसका फल यह है कि बिल का अभी तक पेमेन्ट ही नहीं हुआ ?
आप जरा बाहर रिसेप्शन रूम में इन्तजार कीजिये ! बॉस अभी अमरीका के राष्ट्रपति जिमी कार्टर से टेलीफोन पर बात कर रहे हैं। बड़े-बड़े जासूसों का दुनिया भर के बड़े लोगों से पाला पड़ता है। पाला ही क्या कभी-कभी तो एक-एक किलो के ओले तक पड़ जाते हैं। धन्धा ही ऐसा है साहब।
A1
मेरा केस बहुत नाजुक है। पता नहीं यह कर पायेंगे या नहीं ?
आप चिन्ता मत कीजिये, इनके हाथ भी बहुत नाजुक हैं। नई नवेली दुल्हन के हाथ भी इतने नाजुक नहीं होते। गुलाब का फूल उठायें तो इनकी कलाइयों में मोच आ जाये।
फिर ऐसे जासूसों से मैं काम क्या करवाऊंगा ? जिनकी कलाइयां ही ऐसी नाजुक हों वह जासूसी क्या खाक करेंगे ?
सुनिये तो। अजी आप पुराने जमाने की बात करते हैं जब लातों के भूतों से पाला पड़ता था। आज जमाना बदल गया है। सारी ताकत दिमाग में भरी होती है। दिमाग से ही लड़ाई लड़ी जाती है। इनके दिमाग में इतनी ताकत है कि वह गाजियाबाद को उड़ा कर रख दे।


आपको मैं केस संक्षेप में बताता हूं। मैं मशहूर जौहरी हीरालाल पन्नालाल की कम्पनी में काम करता हूं। सेठ लोग मुझ पर बहुत विश्वास करते हैं। कम्पनी ने न्यूयार्क में अपनी दुकान खोल ली है। सेठ जी चाहते हैं हीरे, जवाहरात की पहली किस्त लेकर मैं खुद न्यूयार्क जाऊं। अगले सप्ताह हमें जाना है, लेकिन कल से एक व्यक्ति दुकान से निकलने पर रोज मेरा पीछा करने लगा है। मैं उसे नहीं पहचानता, यह भी नहीं जानता वह कौन है, क्या चाहता है? क्या आप उससे निबट सकते हैं?
आप फिक्र न करें। घर जाइये. कल से ही हम उससे निबटना शुरू कर देंगे। आप ऐसा बिहेव करें जैसे कुछ हुआ ही न हो।
वह जो मोटा सा आदमी हमारे मुवक्किल श्यामलाल के पीछे-पीछे जा रहा है वही होगा। इसे रंगे हाथों पकड़ कर नानी याद दिला देंगे।
ऐ भाई, जरा हमारी बात सुन। तू रोज श्याम लाल का पीछा क्यों करता है? पीछा करना ही है तो किसी लड़की का पीछा कर। आगे से श्याम लाल के पीछे-पीछे जाते हमने देख लिया तो तेरी हम आलू की टिकिया बना देंगे। नाक को फ्राई करके कटलेट बना कर कुत्तों को खिला देंगे।
ओये जमूरे, तेरी यह मजाल, लच्छीराम से तू ऐसी बातें कर रहा है। कहते हैं कि गीदड़ की मौत आती है तो वह शहर की तरफ भागता है। मैं श्यामलाल के पीछे-पीछे जाऊं या आगे उसमें तेरे बाप का क्या जाता है? यह सड़क क्या श्यामलाल के बाप की है? यह सरकारी सड़क है, इस पर जिसकी मर्जी आगे चलेगा।
बता यह सड़क तेरे बाप की है या श्यामलाल के बाप की है?
भापा जी इतना गुस्सा मत खाओ। मैं तो एक बात पूछ रहा था।



इब क्या होगा याड़ी ? लच्छीराम तो तेरा हुलिया बिगाड़ कर चला गया ।
होगा क्या, हम जरा उस श्यामलाल से जाकर उसका हाल पूछते हैं ।उसी की गलती है यह ।
श्यामलाल के बच्चे, दाल-दाल के कच्चे, तूने हमें मरवा दिया । हमारी फिजूल में ही पिटाई करवा दी । हमने तेरा क्या बिगाड़ा था ।
मैंने तुम्हारी पिटाई करवाई । वह कैसे ? मैंने तो सिर्फ अपना केस सौंपा था तुम्हें ।
तूने हमको यह क्यों नहीं बताया कि यह सड़क तेरे बाप की नहीं है ? हम यही सोचते रहे सड़क तेरे बाप की है तभी तू उसके पीछा करने परनाराज है ।
जाओ फूटो यहां से । निकम्मे आदमी कहीं के । दिमाग मेरा ही खराब था जो तुम जासूसों को काम पर लगा दिया । तुम्हें जासूस किसने बनाया ? तुम्हें यह भी पता नहीं हैं कि सड़कें किसी के बाप की नहीं होतीं । सारी सड़कें सरकारी होती हैं वह सार्वजनिक सम्पत्ति हैं । उस पर हर कोई चल सकता है । लेकिन बुरे इरादे से किसी दूसरे का पीछा नहीं कर सकता ।
ठहरिए श्यामलाल जी,दरअसल बात यह है कि लच्छीराम ने इसके सिर पर जोर का झापड़ मारा था, शायद कोई पेच ढीला हो गया होगा वर्ना इतना बेवकूफ नहीं है यह ।
यह देखिए मैंने इसकी खोपड़ी का ढक्कन निकाल लिया, अब आप खुद ही देख सकते हैं कि इसके दिमाग में पेच ढीले होगये हैं । एक नहीं कई पेच ढीले हो गये हैं । दो-तीन जगह से तारें कट गयी हैं उनमें शायद शार्टसर्किटिंग हो रही है । दो कंडेन्सर और एक वाल्व खराब हो गया है ।
मैंने पेच कस दिये हैं और खराब कंडेन्सर तथा वाल्व बदल दिये हैं । सारी खराबी दूर कर दी अब यह ऐसी वैसी बहकी बातें नहीं करेगा और आपको ताजे दिमाग के साथ अपनी जासूसी का कमाल दिखायेगा, आप अपना दिल थाम कर बैठिये ।
SCREW!




मिलबिल पिलपिल के नये कारनामे अगले अंक में पढिए।

पृष्ठ १७ का शेष

'मैं सेठ यसवन्त राय बोल रहा हूं ।'

'ओहो—कहिये सेठ साहब, क्या गाड़ी खराब हो गई है ?'

'नहीं भई···एक फ्रॉड धोखा देकर मेरी बेटी की गाड़ी ले उड़ा है।'

'हाय—कब की घटना है ?'

'आज की···थोड़ी देर पहले की ।'

'आप ने पुलिस में रिपोर्ट कराई ?'

'नहीं···उसने तुम्हारे गैरिज का पता बताया था···इसलिए मैंने उचित समझा कि पहले तुमसे मालूम कर लूं ।'

'क्या नाम बताया था उसने ?'

'नाम तो कुछ भी नहीं बताया था ।'

'तब तो बड़ी मुश्किल होगी—इधर तो कोई मैकेनिक आपकी गाड़ी लेकर नहीं आया




···म आपकी सारी गाड़ियां पहचानता हूं··· मिल की थी या आपके निजी प्रयोग की थी ।'

'नहीं भई···वह तुम्हारी पहचान की गाड़ी नहीं, नई बाक्स वैगन है···हमने कल ही अपनी बेटी को खरीदकर दी थी ।'

'बाक्स वैगन ?' शास्त्री ने चौंककर पूछा, 'किस रंग की ?'

'सफेद···मिल्की व्हाइट···।'

'जरा एक मिनट ठहरिये ।'

सेठ साहब रिसीवर कान से लगाए खड़े रहे। थोड़ी देर बाद शास्त्री की आवाज आई—

'हैलो···सेठ साहब ?'

'हां हां···में सुन रहा हूं ।'

'आपकी गाड़ी यहां मौजूद है···सफेद बाक्स वैगन ।'

'अच्छा···!' सेठ साहब उछल पड़े ।

'उसका नम्बर एम० आर० जैड० एक नौ चार है ना ।'

'हां, हां यही नम्बर है ।' सेठ साहब ने कहा, 'मगर कौन-सा मैकेनिक ले गया था क्योंकि हमारी बेटी ने जो हुलिया बताया था उस हुलिए का आप के यहां कोई मैकेनिक ···'

'··· एक नया छोकरा है साहब···बड़ा ··· और नेक है···अभी एक हफ्ता में ही मेरे यहां काम कर रहा है··· बेचारे की मां बीमार है जिसका इलाज कराने वह बम्बई में आया है—मां के सिवा उसका दुनिया में कोई और अपना है भी नहीं ।'

'ओह···अच्छा, अच्छा···। सेठ साहब हंसकर बोले, 'भई बड़ी भूल होने लगी थी हमसे···खैर उस बेचारे को कुछ मत बोलना ।'

'नहीं बोलूंगा साहब···गाड़ी की कोई जल्दी तो नहीं ?'

'जल्दी तो होती अगर कल इतवार न पड़ता तो—हमारी बेटी परसों कालिज जाएगी इसलिए कल शाम तक किसी समय भेज देना ।'

'बहुत अच्छा···सर ।'

'हां और—क्या वह ड्राइविंग भी जानता है ?'

'बहुत अच्छी साहब—जवाब नहीं है ।'

'तब ठीक है—उसको बोल देना···हमारी बेटी को परफैक्ट कर देगा तो वह जो कहेगा हम देंगे ।'

'बहुत अच्छा साहब !'

सेठ साहब ने फोन डिस्कनैक्ट कर दिया और पद्मिनी और शोभना की ओर मुड़कर हंसते हुए बोले—

'भई पद्मिनी···हम गलत समझे थे··· वह तो सचमुच ही उसी गैरिज में काम करता है ।'

'देखो डैडी—' पद्मिनी आंखें नचाकर बोली, 'मैं कहती थी कि वह एक शरीफ, ईमानदार और साहसी आदमी है—आपने उसका नाम पूछा था ?'

सेठ साहब ने एक जोरदार ठहका लगाया और बोले—

'ऐ लो···हम भी उसका नाम पूछना भूल गए ।'

पद्मिनी के साथ शोभना भी हंस पड़ी ।

सेठ साहब ने टेबल लैम्प बुझाकर रजिस्टर रख दिया और चश्मा उतारकर बेड की ओर मुड़े तो शोभना जाग रही थीं । सेठ साहब ने कहा—

'अरे···तुम सोई नहीं अभी तक ?'

'नींद ही नहीं आ रही ।'

'चलो अच्छा हुआ···तुमसे कुछ बातें भी करनी थीं···।' सेठ साहब बोले ।

'क्या बातें करनी थीं···उस मैकेनिक के बारे में तो नहीं ?'

'भई वाह···तुम तो गुप्त बातें भी जान लेती हो ।' सेठ साहब ने हंसकर कहा ।

'मैं तो स्वयं भी देर से उसके बारे में सोच रही हूं—पद्मिनी जब उसकी प्रशंसा कर रही थी तो उसके स्वर में एक अनोखा उत्साह था ।'

'मैंने तो उसका चेहरा भी देखा था··· लगता है कि लड़का पद्मिनी को पसंद आ गया है—और फिर हमें चाहिए भी क्या ? एक गरीब, होनहार, शरीफ लड़का और फिर वह तो बहादुर भी है—दुनिया में उसकी बूढ़ी बीमार मां ही तो है—हम मां को भी यहीं रख लेंगे, वैसे भी वह परदेशी हैं । मां का इलाज करा देंगे···तुम्हारा भी अकेलापन दूर हो जाएगा ।'

'आपका विचार ठीक है···किन्तु वह लड़का भी माने···तब है ।

'अरे···इतने बड़े घराने की लड़की को कौन ठुकरा देगा शोभना···और फिर वह तो खुशी से पागल हो जाएगा—उसने तो सपने में भी ऐसी बात न सोची होगी···कहां एक साधारण-सा मैकेनिक और कहां सेठ यशवन्त का दामाद—वह कल गाड़ी लेकर आएगा तब मैं कोई फैसला करूंगा ।'

सेठ साहब लान में बैठे अखबार पढ़ रहे थे । शोभना पास ही लांग चेयर पर आधी लेटी हुई थी और उंगलियों में ऊन लपेटे कुछ बुन रही थीं । पद्मिनी अपनी किसी सहेली के घर गई थी । अचान फाटक में से बाक्स वैगन दाखिल हुई और सेठ साहब चौंक कर सीधे बैठ गए···फिर धीरे से शोभना से बोले—

'वह आ गया ।'

शोभना भी संभल कर बैठ गई । गाड़ी पोर्टिको में आ कर रुक गई और उसमें से वही नौजवान उतरा जिसके बदन पर मैकेनिक का-सा लिबास था···हाथों में और चेहरे पर कई स्थान पर कालिख लगी हुई थी । वह इधर-उधर देखकर लानमें बैठे सेठ साहब और शोभना को देखकर चौंक पड़ा···फिर उनकी ओर बढ़ा । सेठ साहब जल्दी से गम्भीर होकर बैठ गए और धीरे से शोभना से बोले—

'इधर ही आ रहा है ।'

शोभना भी गम्भीर हो गई । मैकेनिक उनके पास पहुंच कर शिष्टता से दोनों हाथ

जोड़कर बोला—

'नमस्ते···।'

'नमस्ते···।' सेठ साहब ने अभिवादन का उत्तर दिया।

'साहब, शास्त्री जी ने गाड़ी भिजवाई है···' उसने चाबी और बिल मेज पर रखा और बोला—'यह बिल है मरम्मत का।'

'ठीक है—।'

'अच्छा साहब···नमस्ते···।'

मैकेनिक जाने लगा तो सेठ साहब ने कहा—

'ठहरो—।'

मैकेनिक चौंककर रुक गया और उनकी ओर मुड़ा। सेठ साहब ने गम्भीरता से पूछा—

'शास्त्री ने तुमसे और कुछ नहीं कहा था?'

'जी हां कहा तो था···शायद मेम साहब को परफैक्ट ड्राइविंग सिखाने की बात कही थी।'

'तुम इसके लिए जो मांगोगे दे दिया जाएगा।'

'साहब! मेम साहब को किसी ड्राइविंग स्कूल में क्यों नहीं ट्रेनिंग दिलाते—वहां लेडी ट्रेनर भी होती हैं।'

'हम केवल तुम्हारी बाबत पूछ रहे हैं।'

'साहब! स्कूल वाले प्रोफेशनल ट्रेनर होते हैं···मैं प्रोफेशनल मैकेनिक हूं ट्रेनर होता तो किसी स्कूल ही में नौकरी कर लेता—मुझे बखशीश की जरूरत भी नहीं साहब।'

'हम बखशीश नहीं···मेहनताना देंगे।'

'साहब! एक-दो हफ्तों की ट्रेनिंग का क्या मेहनताना लूंगा···आप बड़े हैं··· मेरे पिता समान हैं—अगर आज्ञा करें तो वैसे ही सिखा दूंगा···लेकिन मेहनताना नहीं लूंगा।'

'भई···तुम बहुत स्पष्टवादी और भले नौजवान हो—हम कई दिनों से किसी ऐसे ही ट्रेनर की खोज में हैं लेकिन कोई मिल नहीं रहा···और हमारी बेटी कितनी अनाड़ी है, यह तुम देख ही चुके हो—या तो अपनी जान दे बैठेगी या किसी और की जान ले लेगी, अगर तुम थोड़ा समय निकाल कर उसे ट्रेनिंग दे दोगे तो हम बहुत आभारी होंगे।'

'अरे साहब···।' मैकेनिक हाथ जोड़कर बोला, 'ऐसे शब्द कहकर मुझे लज्जित न करें ···मैंने तो पहले ही कहा था कि आप मेरे पिता समान हैं···मैं आपकी आज्ञा नहीं टालूंगा।'

'तब तुम भी हमारे बेटे ही के समान हो—कल से यहां आ जाया करो—।'

'जी—बेहतर है—अब आज्ञा दीजिए ···चलता हूं।'

'नहीं—ऐसे नहीं···बैठ जाओ···चाय पीकर जाना···अभी हमारी बेटी भी आती होगी।'

'साहब! मेरे कपड़े गंदे हो रहे हैं—यह कुर्सी खराब हो जाएगी।'

'कपड़े गंदे होने से क्या अन्तर पड़ता है —आदमी का चरित्र गंदा नहीं होना चाहिए ···चलो बैठ जाओ...हम तुम्हें चाय बिना पिये नहीं जाने देंगे।'

सेठ साहब के आग्रह करने पर मैकेनिक को बैठना ही पड़ा।

मैकेनिक पद्मिनी को ड्राइविंग सिखा रहा था। वह पद्मिनी को कार के साथ जूहू विले पार्ले स्कीम में ले आया था जहां गलियों में ट्रैफिक कम था···पद्मिनी ड्राइविंग की प्रैक्टिस कर रही थी। मैकेनिक उसके ऊपर झुका हुआ कह रहा था—

'हां···अब एक्सीलिटर दबाइए···और जोर से···और जोर से···।

'और कितना दबाऊं? अब नहीं दबता।'



'ठीक है—अब ब्रेक लगाइये···ऐसे जैसे कोई अचानक सामने आ गया हो।'

पद्मिनी ने फुर्ती से ब्रेक लगाए और गाड़ी चिरमिराकर टेढ़ी होकर ठहर गई। मैकेनिक ने मुस्कराकर कहा—

'देखा···यह हुई परफैक्ट ड्राइविंग···अब फिर गीयर डालकर बढ़िये।

पद्मिनी ने गीयर डाला और गाड़ी बढ़ा दी।

मैकेनिक ने कार का बोनट खोला और इंजन पर झुकता हुआ बोला—

'अब थोड़ा-सा इंजन का काम भी सीखिए···ड्राइविंग जानने वाले के लिए बहुत जरूरी है···कभी अचानक गाड़ी खराब हो जाने पर दूर-दूर तक कहीं कोई मैकेनिक ही नहीं मिलता···ड्राइविंग करने वाला स्वयं ही छोटा-मोटा काम कर लेता है।"

उसने इंजन की साधारण मैकेनिज्म, कल पुर्जे और साधारणतया उत्पन्न होने वाले विकारों के बारे में पद्मिनी को बताया और पद्मिनी इन बातों को अपने मस्तिष्क में बिठाती रही···।

□ शोभना और सेठ साहब लॉन में बैठे शाम की चाय पी रहे थे कि बाक्स वैगन फाटक में दाखिल हुई। उसमें बैठे पद्मिनी और मैकेनिक दोनों ही ठहाके लगा रहे थे। पद्मिनी ने अचानक लॉन के पास पहुंचकर चर्र से ब्रेक लगाए और सेठ साहब और शोभना उछल पड़े। पद्मिनी हंसती हुई कार से नीचे उतर आई···मैकेनिक भी उसके पीछे उतरा···इस समय उसके बदन पर साफ सुथरी पतलून और कमीज थी···होंठों पर मुस्कान थी।

'आओ बच्चों आओ···।' सेठ साहब ने मुस्कराकर कहा।

'देख लीजिए साहब।' मैकेनिक मुस्कराता हुआ बोला, 'एक ही हफ्ते में इन्हें इतना परफैक्ट कर दिया है कि आप चाहें तो ओलम्पिक रेस में भेज सकते हैं।'

पद्मिनी ने हंसकर कहा—

डैडी—मैं कपड़े बदलकर आती हूं।'

फिर पद्मिनी दौड़ती हुई अन्दर चली गई और सेठ साहब ने मैकेनिक से कहा—

'बैठो···भई बैठो···तुम खड़े क्यों हो?'

शेष आगामी अंक में

# जूडो कैराटे कैसे सीखें ?

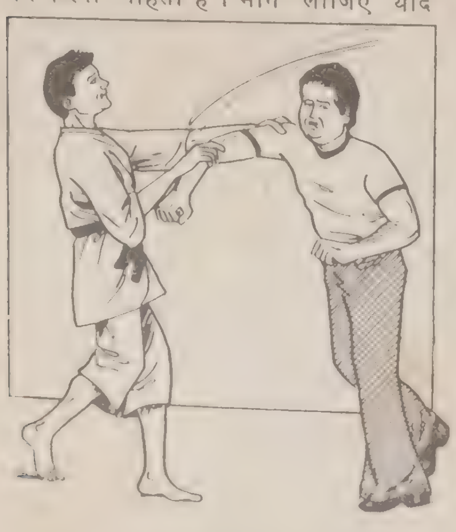
## बारहवां जूडो दाव

यदि विरोधी पीछे से आकर आपका गिरेवान.पकड़ लेता है या गर्दन जकड़ लेता है तो आप फुर्ती से अपना एक पैर दुश्मन के पैर के पीछे ले जाइए और अपना उसी दिशा वाला एक हाथ उसकी कमर में डालिए तथा दूसरा हाथ उसके आगे वाले पैर में डालिए और घुटने को ऊपर को झटका देते हुए कमर वाला अपना हाथ स्थिर रखते हुए जिस हाथ से अपने उसका पैर थाम रखा है, उसी हाथ से पैर को ऊपर की ओर झटके से उठा दीजिए। दुश्मन सिर के बल जमीन पर आ गिरेगा।



## तेरहवां जूडो दाव

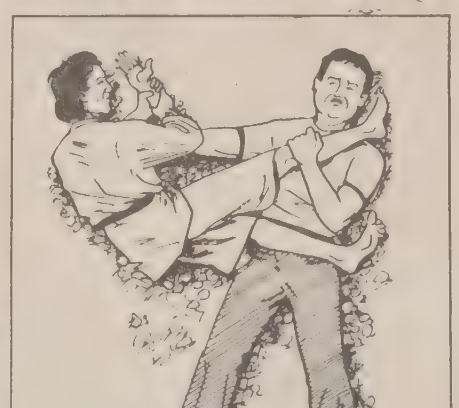
यदि आपका कोई शत्रु सामने से आकर अपने घूसे का प्रहार आपके सिर पर या मुंह पर करना चाहता है। मान लीजिए यदि



वह दायें हाथ से प्रहार कर रहा है तो आप सिर को बचाते हुए पीछे कर लें और अपने दायें हाथ से वार रोकते हुए दबाब डालें और उसका हाथ घुमाते हुए अपने हाथ की लपेट में ले लें। आपकी लपेट में दुश्मन का हाथ जैसे ही आ जाये—फौरन दूसरे हाथ से उसका कंधा विपरीत दिशा में नीचे की ओर दबाते चले जायें। दुश्मन मुंह के बल जमीन पर गिर पड़ेगा।

## चौदहवां जूडो दाव

यदि आप शत्रु को किसी भी उपाय से नीचे चित पटक दें और आप स्वयं भी गिर जायें तो ऐसी दशा में फुर्ती से शत्रु का एक हाथ कलाई से कसकर पकड़ लें और अपने एक पैर को घुटनों से मोड़ कर दुश्मन की कमर के पास रोक लगा दें तथा दूसरे पैर को उसकी छाती तथा गले के बीच से ले जाते हुए फैलाकर रख दें और पैर से नीचे की ओर दबाये रखें। हाथ



को अपने दोनों हाथों से अपनी ओर खींचें तथा कमर पर अड़ाए हुए पैर से शरीर को आगे न बढ़ने दें। छाती पर फैले पैर का काम यह है कि शत्रु उठ न पाए या करवट न लेने पाये।

## पन्द्रहवां जूडो दाव

यदि शत्रु को गिराते हुए आप भी शत्रु के पैरों की तरफ गिर पड़े तो ऐसी दशा में फुर्ती से शत्रु का एक पैर पिंडली के पास से थाम कर अपनी बगल में दबा लें और हाथों को पैर के नीचे से ले जाते हुए आपस में बांधकर पिंडली के नीचे की ओर से ऊपर को अपनी ओर उठायें। यह तब तक करें जब तक शत्रु के पैर का घुटना थोड़ा मुड़ न जाए। अपने दूसरे पैर को शत्रु की जांघ के बीच से फैलाकर दूसरे पैर तथा पेट पर नीचे दबाव डालें। शत्रु बेबस हो पड़ा रह जाएगा।



## एक से अधिक लोगों का मुकाबला करना

यदि एक शत्रु आपको पीछे से पकड़ ले और दूसरा सामने से आकर आप पर घूंसा मारना चाहता है तो ऐसे में आप अपनी एक हाथ की कोहनी का प्रहार पीछे खड़े शत्रु के पेट पर कसकर करें तथा दूसरे हाथ को चेहरे के सामने लाते हुए घूंसे का प्रहार रोकें। कोहनी के वार से पीछे खड़ा शत्रु आपको फौरन छोड़ देगा। फिर आप आगे वाले शत्रु से निपटने के लिए तैयार हो जाइए।

## दूसरी स्थिति

अब यदि दुश्मन अगल-बगल से आकर आपके दायें-बायें दोनों हाथ जकड़ लेते हैं तो फुर्ती से घुमावदार किक (राउन्ड किक) का प्रहार एक तरफ से शत्रु की छाती अथवा पेट पर अथवा कनपटी पर कीजिए। फिर दूसरे पैर की पीछे की ठोकर दूसरे शत्रु के पेट पर मारिए। जैसे ही आपके हाथ स्वतंत्र हो जायें आप फुर्ती से घूसों का भी प्रहार कर दें। जैसे ही दूसरा शत्रु सभलकर आपके पीछे से वार करने के लिए आए आप तुरंत पीछे की पैर की ऊंची ठोकर शत्रु के मुंह पर मारें और उन पर काबू पा लें।

**शेष आगामी अंक में**



सवाल यह है ?
क्या आपको वे दिन याद हैं ?
जब मोरारजी देसाई ने कहा था कि चौधरी चरणसिंह और उसके चेले चांटे जनता पार्टी छोड़ गये हैं तो उनकी पार्टी और साफ सुथरी होकर और निखर कर सामने आई है।
मतलब है, अटल बिहारी, चन्द्र शेखर और जगजीवन राम ही रह गये तावीज़ बना कर गले में लटकाने के लिए।
जब चारों ओर शोर मच गया कि बाबू जगजीवन राम जनता पार्टी छोड़ रहे हैं। पर यह बात झूठ थी। बाबू जी कह रहे थे, मैं तो कम्बल छोड़ दूं, पर कम्बल मुझे नहीं छोड़ रहा है।
जनता पार्टी
जब जनता पार्टी अपनी डूबती हुई नैया को बचाने के लिए अपने स्वामी से सहायता मांग रही थी और स्वामी ईरान के तेल के कुए से बंधा अपनी सहायता के लिए पुकार रहा था।
ईरान
बचाओ
बचाओ
जनता पार्टी
चौधरी चरण सिंह पंडित नेहरू की महानता पर कीचड़ उछाल रहे थे। तारकेश्वरी सिन्हा इस बात पर शोर मचा रही थीं और कांग्रेस के सभी नेता जूते खाने के बाद भी चौ० चरण सिंह के साथ थे।
चौधरी चरण सिंह खुद कोड़े लगा रहे थे और कह रहे थे, यदि उनका शासन पलट गया तो लोगों को सरेआम कोड़े लगाये जायेंगे।
नेहरू विरोधी प्रचार
चौधरी चरणसिंह ने कहा था कि लोग मेरे जलसों में गड़बड़ कर रहे हैं इसलिए भविष्य में मैं किसी के भी जलसे नहीं होने दूंगा।
और बागपत में पत्थर फेंकने और हुल्लड़ करने वाले चौधरी चरण सिंह की सेवा में उपस्थित हो गये थे।
मुर्दाबाद
अपने विरोधी की चुनाव सभायें हमसे भंग करवाइये।
लोगों के सर फोड़ने की गारन्टी।
आखीर तक जनता पार्टी के नेता एक दूसरे को प्रेम प्यार और मेल मिलाप का संदेश देने में लगे हुए थे।
सरकारी फायलें चुराने और पकड़ में न आने के लिए चन्द्र शेखर से ट्रेनिंग नहीं ली होगी।
डाक रद्दी में बेचने वाला पोस्टमैन गिरफ्तार
उन्होंने कहा है, बड़े नेताओं को चाहिए कि आरोप लगाने वालों को अदालत में ले जाकर उन पर मुकदमे चलायें।
मतलब है, जो बात बाहर सिद्ध नहीं हुई वह मैं अदालत में सिद्ध करवा लूं ?
कृपलानी का सुझाव।
लोग बड़े-बड़े नेताओं को सिक्कों और नोटों में तोल रहे हैं। किसान नेता होने के नाते हम आपको भूसे में तोलने का ऐलान कर दें ?
चुनाव अभी होंगे।
चुनाव नहीं होने चाहियें।
फरहाद शीरी को पाने के लिए दूध की नहर निकाल कर लाया था। बेबी के बायफ्रेंड से पूछो, वह जनता पार्टी के राज्य में एक बोतल मिट्टी का तेल ला सकता है ?




**तिलक राज अरोड़ा—खुर्जा** : डीयर गरीब चन्द जी, आपकी बिरादरी वालों ने लगभग २५-२६ अंक यानि पिछले ६ महीने के सभी अंक कुतर दिए। इन सभी अंकों को मैं दुबारा प्राप्त करना चाहता हूं। बताइये मैं क्या करूं ?

**उ०** : जो अंक भगवान को प्यारे हो गये वह लौट कर थोड़े ही आयेंगे। आप उनकी याद में सत्तू से चिल्ली की मूर्ति बना कर खाली जगह स्थापित कीजिये। उसका उद्घाटन खुर्जा के नोटी के मूर्ख से करवायें।

**इमरान हैदन—दुर्गानी** : "मेरे घर आपके बिरादरी वाले रोज आठ-दस मारे जाते हैं।" बड़ा तरस आता है, क्या करूं बताइए ?

**उ०** : उन पर तरस नहीं गर्व करें। मारे वही वीर जाते हैं जो मैदान में उतरते हैं। जीते तो डरपोक रहते हैं जो चूड़ियां पहन घर बैठे रहते हैं।

**कारु गुलाबी—बेरागढ़** : गरीबचन्द जी मैं एक लड़की से प्रेम करता हूं तो दूसरे लोग जलते हैं ?

**उ०** : आप क्या चाहते हैं वह ठंडे हो जायें ? प्रेम आप कर रहे हैं और मरें दूसरे लोग ?

**योगेश संधवी जैन—बेरमो** : गरीब चन्द मैंने सुना है कि आप एक महीने बाद मरने वाले हैं तो पत्र का जवाब बाद में कौन देगा ?

**उ०** : हर हफ्ते दीवाना वाले पत्रों को जलाकर मेरी याद में चाय बनाकर पीया करेंगे।

**मनोहर गुलानी—बेरागढ़** : गरीब चन्द जी मैं जिस लड़की के पीछे पड़ता हूं तो वो भी मेरे पीछे पड़ती है क्या ?

**उ०** : या तो वह आपका मुंह नहीं देखना चाहती या अपना मुंह नहीं दिखाना चाहती। आपके चेहरे पर चेचक के दाग तो नहीं हैं ?

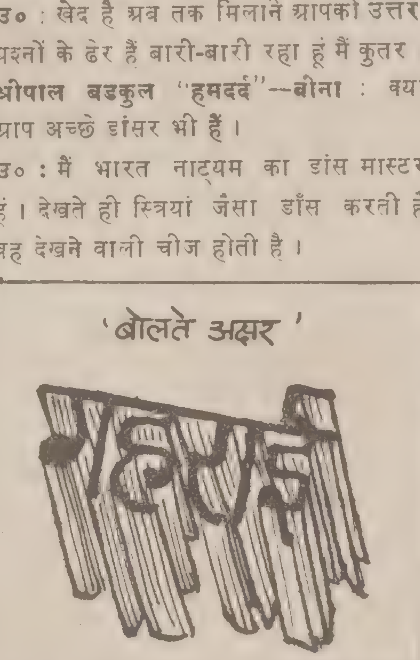
**मदन किशोर होतवानी—रायपुर** : दीवाना से काटकर कूपन प्रश्न भेजें अनेक, गरीब चन्द जी क्या बात है उत्तर मिला न एक ?

**उ०** : खेद है अब तक मिलाने आपको उत्तर, प्रश्नों के ढेर हैं बारी-बारी रहा हूं मैं कुतर।

**श्रीपाल बडकुल "हमदर्द"—बीना** : क्या आप अच्छे डांसर भी हैं।

**उ०** : मैं भारत नाट्यम का डांस मास्टर हूं। देखते ही स्त्रियां जैसा डाँस करती हैं वह देखने वाली चीज होती है।

'बोलते अक्षर'



**अब्दुल कलाम—राजस्थान** : खिजा के फूल पे आती कभी बहार नहीं।
मेरे नसीब में ऐ दोस्त तेरा प्यार नहीं ?

**उ०** अगर दुनिया चमन होती तो वीराने कहां जाते,
हर दिल आबाद होता तो बरबादी के अफसाने कहां जाते।

**के० पी० अरोड़ा—काशीपुर** : ईश्वर किन लोगों से खुश रहते हैं ?

**उ०** : जो दूसरों को बोर नहीं करते।

**योगेश कुमार—डीमापुर** : आपने कभी बड़े घर (यानी जेल) की भी हवा खाई है क्या ?

**उ०** : कोइ जेल हमारे लिये जेल नहीं होती। मेरे साइज को देखिये, तिहाड़ जेल के सींखचे मुझे गेटवे आफ इन्डिया जितने खुले लगते हैं।

**प्र०** : अपनी बीबी से हमारा परिचय करवाइये ना आखिर हम भी तो उनके देवर हैं, क्यों ?

**उ०** : आप देवर होंगे लेकिन वह तो जेवर के अलावा और किसी से परिचय करना ही नहीं चाहती।

**विनोद 'ऋतु'—पपरोला** : गरीब चन्द जी, आपकी पूंछ हमारे पत्रों के बोझ से थकती तो नहीं है ?

**उ०** : आपके पत्रों में हलके फुलके सवाल होते हैं। पूंछ पर ज्यादा भार नहीं पड़ता।

**सुधीर श्रीवास्तव—मुजफ्फरपुर** : मेरे घर में एक बिल्ली है वो हमेशा दूध पी जाया करती है। आप यहाँ आ जायें ताकि वो दूध पीना बंद करके आपके पीछे पड़ जाय।

**उ०** : आपने मुजफ्फरपुर से १९७७ में जार्ज फर्नान्डीज नाम के चूहे को चुनकर भेजा था। उसे ही बुला लीजिये न।

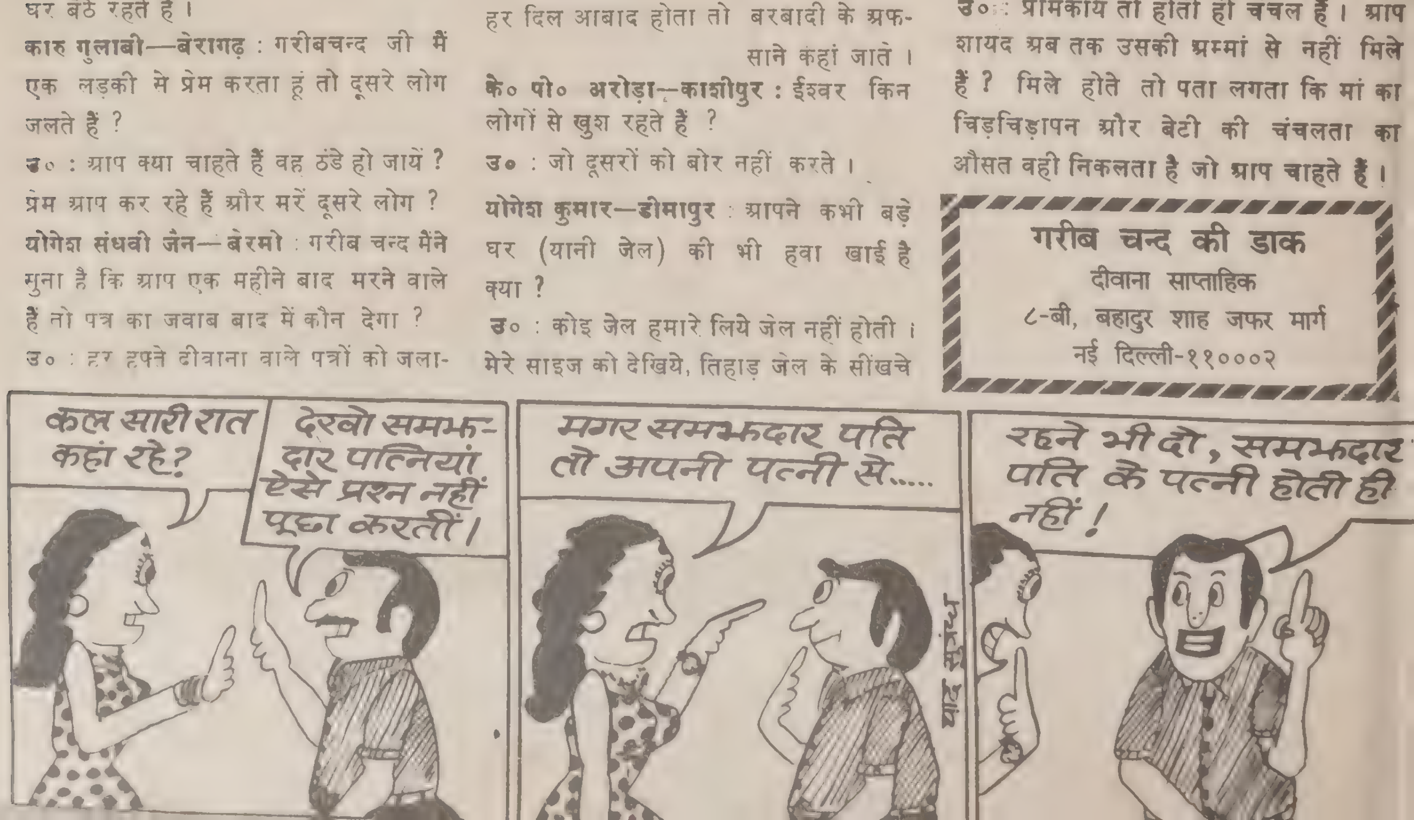
**अश्वनी खन्ना—अमृतसर** : गरीब चन्द जी, आपको कागज कुतरने के सिवाय क्या काम है ?

**उ०** : कुतरने के बाद उसको हजम करने का काम भी तो है। कार्ड का कागज पचाना मजाक नहीं है।

**मदन खत्री "भावुक"—काठमांडो** : गरीबचंद जी मैं तो "भावुक" हूं लेकिन मेरी प्रेमिका बहुत चंचल स्वभाव की है, आप कहिए मैं क्या करूँ ?

**उ०** : प्रेमिकायें तो होती ही चंचल हैं। आप शायद अब तक उसकी अम्मां से नहीं मिले हैं ? मिले होते तो पता लगता कि मां का चिड़चिड़ापन और बेटी की चंचलता का औसत वही निकलता है जो आप चाहते हैं।

**गरीब चन्द की डाक**
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुर शाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२






# अनमोल लतीफे

● एक युवती साधू के पास गयी और बोली, 'महाराज आपने कहा था अपने एक प्रवचन में कि अहंकार सबसे बड़ा पाप है। मैं जब भी शीशा देखती हूं कि मैं कितनी सुन्दर हूं। मुझे बहुत अहंकार हो जाता है। इस पाप का क्या प्रायश्चित है ?'
साधू बोला, 'बच्चा, गलत फहमी का शिकार होना पाप नहीं है।'

● एक युवती मनोवैज्ञानिक चिकित्सक के पास गयी और कहने लगी, 'डाक्टर, लोग कहते हैं कि मैं बहुत निर्लज्ज हूं। लोग एसी झूठी बात क्यों कहते हैं मेरे बारे में ?'

## अंकुर

डाक्टर बोला, 'मैं जरा आपका नाम और बिमारी सम्बन्धी बातें दर्ज करना ...

गोद से उठकर उस कुर्सी पर बैठ जाइये।

● किसी लड़की से केवल उसकी सुन्दरता देख शादी करना ऐसा ही है जैसे सिर्फ पेन्ट देखकर मकान खरीदना।

● एक युवती के कमर से जरा नीचे आपरेशन हुआ। उसने डाक्टर से पूछा, 'डाक्टर साहब, आपरेशन का दाग नजर आयेगा ?'

## खियक

डाक्टर ने उत्तर दिया, 'यह तो इस बात पर निर्भर करेगा कि कपड़ों का कौन सा फ़ैशन चलता है।'

**पृष्ठ १८-१९ के उत्तर.**

| | |
|---|---|
| १. वसीम बारी | ७. आसिफ इकबाल |
| २. इकबाल कासिम | ८. जावेद मियांदाद |
| ३. मुदस्सर नजर | ९. एहतशामुद्दीन |
| ४. सिकन्दर बख्त | १० अब्दुल कादिर |
| ५. सादिक मुहम्मद | ११. इमरान खां |
| ६. वसीम राजा | १२. जहीर अब्बास |

● एक स्त्री का पति मर गया। जब उसे दफना कर घर लौटे तो स्त्री की सहेली ने सहानुभूति जताते हुए कहा, "यह सब ऊपर वाले की मर्जी है। वह जो करता है अच्छा ही करता है। इसमें भी कोई न कोई बात तुम्हारे फायदे की होगी।"
वह स्त्री बोली, "हां एक बात तो है। शादी के बीस वर्षों में मुझे आज पता होगा कि मेरे पति ने रात कहाँ बिताई।"

**पृष्ठ ७ का शेष भाग**

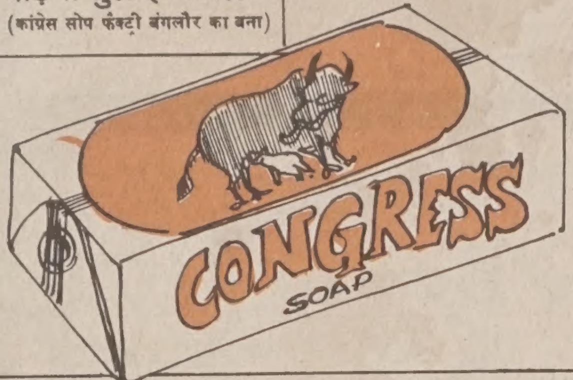
फिर उन्होंने शुरू से आखिर तक सारा किस्सा सुना दिया। 'बेगन को भी बड़ा अफसोस हुआ। कहने लगीं, थोड़ा तो इंतजार किया होता, कोई 'भला मानुष, जरूर मदद करता आपकी। खैर !'

बेगम ने तो खैर इस वाकए को ज्यादा अहमियत नहीं दी लेकिन मोहल्ले में यह खबर बिजली के करेंट की तरह इस कोने से उस कोने में पहुंच चुकी थी। वही मियां उलफेन जिनकी सफाई पसंदी के डंके बजते थे, अब कहीं गंदगी के नाम पर नाक-भौं सिकोड़ते तो फौरन पिकरा चुस्त हो जाता, 'अजी साहब, रहने भी दीजिए। रुपये पड़े हों तो, आप गोबर में भी हाथ डाल दें।

उस समय मियां उलफेन की हालत ऐसी हो जाती जैसे उनके मुंह में मुट्ठी भर गोबर भर दिया हो। ●

# राजनीतिक पार्टियों के
# रंगारंग विज्ञापन

## कांग्रेस साबुन
बढ़िया धुलाई के लिये
(कांग्रेस सोप फैक्ट्री बंगलौर का बना)




चुनावों में जमानत से हाथ धोइये, अपना पत्ता साफ करवाइये।

## डी० एम० के० सिल बट्टा
इडली-वडा के लिये उड़द पीसने का सबसे बढ़िया सिल बट्टा।



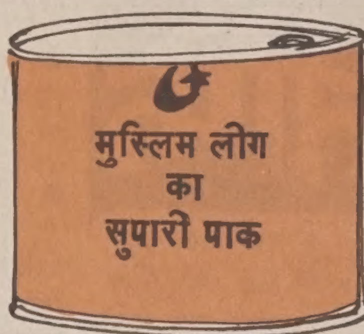

(नोट—ए. डी. एम. के. ट्रांजिस्टर ठीक काम न करे तो इस पत्थर को उस पर दे मारिये)।

## सी. पी. एम. चश्मे
इससे हर चीज लाल रंग की दिखाई देती है।



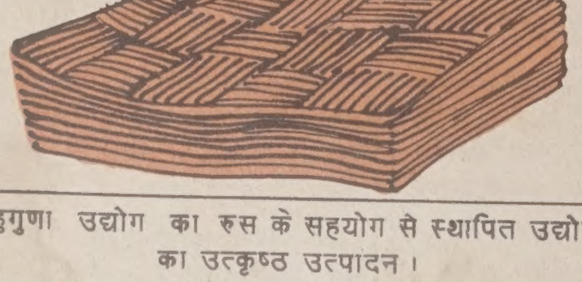
(अमीर लोगों को इस चश्मे से दिखाई नहीं देगा)।
जनता (एस) घी के डिब्बे के साथ एक चश्मा मुफ्त।

## पुराने दकियानूसी साम्प्रदायिक मुसलमानों के लिये टॉनिक



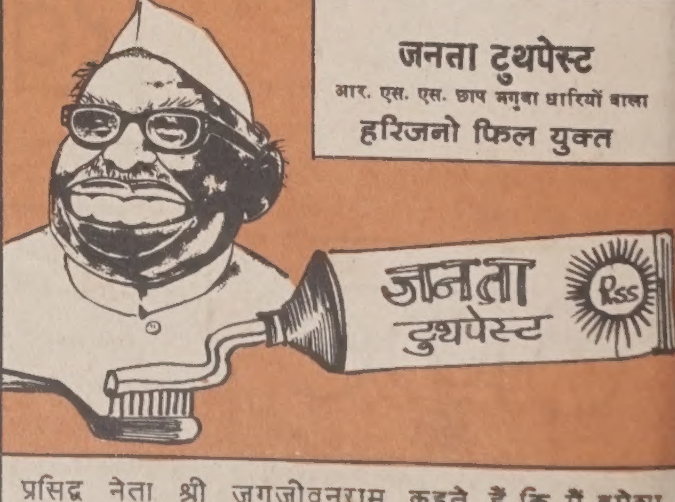

आप भी आजमाइये और प्रगतिवादी की बीमारी से छुटकारा पाइये।
इसे खाकर दकियानूसीपन और मजबूत होता है।

## सी० एफ० डी० चटाइयां

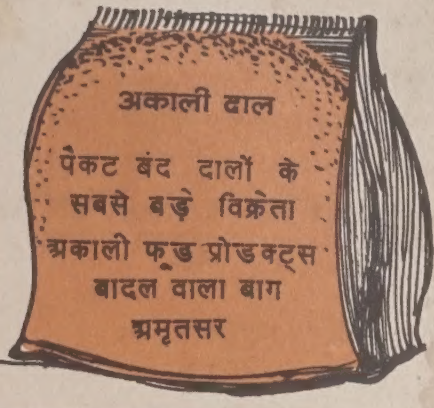


बहुगुणा उद्योग का रूस के सहयोग से स्थापित उद्योग का उत्कृष्ठ उत्पादन।
मुसलमान भाइयों के नमाज के लिये विशेष तौर पर बनाया गया।

## जनता टुथपेस्ट
आर. एस. एस. छाप भगुवा धारियों वाला
हरिजनो फिल युक्त




प्रसिद्ध नेता श्री जगजीवनराम कहते हैं कि मैं हमेशा जनता टुथपेस्ट इस्तैमाल करता हूं।




**अकाली दाल**

यह दाल केवल पंजाब में ही गलती है।

## कश्मीर में और पार्टियों का खाना खराब करने वाला




मशहूर शेख अबदुल्ला कश्मीरी मिर्च।
आप भी आज ही आजमाइये।

## गांव का असली शुद्ध देसी घी

जनता एस

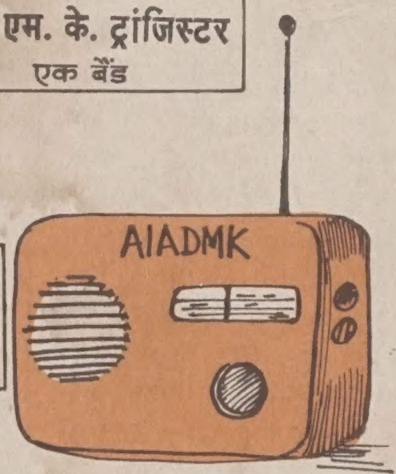



राजनारायण डेरी प्रोडक्ट्स

हर टीन में ऊपर देसी घी की एक परत है और नीचे गोबर भरा है।
नकली साबित करने वाले पर जांच आयोग बिठाया जायेगा।

**अन्ना डी. एम. के. ट्रांजिस्टर**
एक बैंड

यह ट्रांजिस्टर हिन्दी के प्रोग्राम नहीं पकड़ेगा।




(केवल तामिलनाडु और पांडेचेरी में बिक्री के लिये उपलब्ध है)।

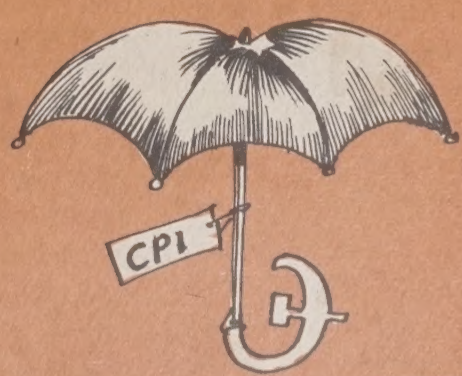



**कांग्रेस आई पेंट**

मध्यावधि चुनावों में नम्बर एक बिकने वाला पेंट।

घटिया से घटिया लीडर भी इस पेंट को मल कर चमक जाता है।
कांग्रेस (अर्स) छोड़ने वालों को विशेष रियायती दर पर मिलेगा।

**सी. पी. आई. छाते**




यह छाते जब मास्को में बारिश होती है तो अपने आप ही खुलते हैं। भारत के मौसम के अनुसार यह नहीं करेगा।

# "अश्रुआलय"

—सुभाष जैन

मद्रास के एक चिकित्सक की इस रिपोर्ट को पढ़ने के बाद की मानव स्वभाव के लिये रोना एक आवश्यक क्रिया है; क्योंकि इससे स्नायु को आराम मिलता है व मन को भी शान्ति मिलती है ! बम्बई के सेठ बाटलीवाला की आंखों में एक नया सपना तैरने लगा, दिन-रात उनकी आंखों के सामने रोते हुए चेहरे नाचने लगे ! उन्होंने सोचा जब प्रतिक्षालय, भोजनालय, रंगशाला, चित्रशाला हो सकती है तो मानव के लिये रोने का स्थान न होना एक अत्याचार है !

महात्मा बुद्ध के कथानुसार "सात समुद्रों के पानी से अधिक मानव के आंसू बह चुके हैं", कहाँ गये वे आसुओं के सात समुद्र ? बिस्तरों में, तकियों में, रुमालों में या गुसलखानों में ! बच्चे खुले आम रो लेते हैं, बृद्ध चश्मे को पोंछते-पोंछते टसुए बहा लेते हैं और औरतों का तो हथियार ही रोना है । लेकिन मर्द जाति कहां जाकर रोये ? क्यों ना उनके लिए अश्रुआलय की स्थापना की जाये जहां वह बिना किसी हिचकिचाहट व शर्म के आंसू बहा कर मन की शान्ति प्राप्त कर सके !

सेठ बाटलीवाला अपनी इस कल्पना को धीरे-धीरे रचनात्मक रूप देने लगे ! जुहु के बीच पर लम्बे-लम्बे नारियल के पेड़ों के मध्य समुद्र के किनारे विश्व में पहले, 'ट्रेजिडी किंग' दिलीप कुमार के नाम पर "दिलीप अश्रुआलय" की स्थापना की गयी जहां सेठ बाटलीवाला ने बाल्टी भर-भर रोने की मुअाद्रा दी ! भारत की परम्परानुसार इसमें भी दो श्रेणियां रखी गयीं ! प्रथम श्रेणी का प्रवेश शुल्क निःसन्देह द्वितीय श्रेणी से अधिक था ! प्रथम श्रेणी रोने को विलासता का रूप दे दिया गया था व द्वितीय श्रेणी में रोने को एक औपचारिकता माना गया था ! प्रथम श्रेणी में एक डनलप की आराम देह कुर्सी और एक आदम कद दर्पण रखा गया था ! अलमारियों में करुणा रस की ढेरों पुस्तकें रखी थीं, टेप रिकार्ड पर मध्यम स्वर में दुखी मन की पुकार चल

यदि फिर भी रोना न आये तो वहां

बहुगुणलय की खुबसूरत लड़कियां थीं जो

काजल की जगह ग्लैसरीन का

मुसलम

प्रयोग करती थीं, जिसके फलस्वरूप उनकी आंखों से अनवरत आंसू बहते रहते थे ! यह तो सर्वविदित है कि बेचारा आदमी खूबसूरत लड़की को रोते हुए नहीं देख सकता । तो बस "बस उनको चुप कराते-कराते खुद रो दिये" यहाँ सार्थक होता था !

परन्तु अफसोस मध्यम श्रेणी के लिए ये सब सुविधायें उपलब्ध नहीं करायी गई थीं । उस श्रेणी में एक लम्बे हाल में मेज और बेंच बिखरे पड़े थे और सिर पर एक गोरखा बैरा खड़ा रहता था कि ग्राहक आंसू पोंछने वाले तौलियों में से कोई तौलिया ले तो नहीं जा रहा था । वह अधिक देर तक तो नहीं रोता अन्यथा उसके बिल में अतिरिक्त पैसे लिये जायें । धीरे-धीरे धन्धा चमक उठा, कारें आने लगीं, नेता आते, अभिनेता आते और रोने का अभ्यास कर चले जाते ।




वह आदमी तुम्हारा बटुआ छीन कर भाग गया! तो जाओ थाने में रिपोर्ट कराओ। मेरी ड्यूटी तो यहां केवल आंतकवादी छात्रों को पकडने के लिए लगी है।

यहाँ तक तो सब ठीक था पर यह उच्च वर्ग के सेठों को अच्छा नहीं लगा क्योंकि उनसे किसी को खाते-पीते देखना सहन नहीं होता था । बस उन्होंने कॉलेज के विद्यार्थियों को लेकर आन्दोलन छेड़ दिया । "रोने की जगह सरकार उपलब्ध कराये," "रोने के लिये अल्पसंख्यकों को मौका नहीं दिया जा रहा," धीरे-धीरे आन्दोलन ने उग्र रूप धारण कर लिया, बसें जलायी जाने लगीं, भूख हड़ताल की गयी—पुलिस व आन्दोलनकारियों ने हथियारों से कई परिवारों को हमेशा के लिए रोने को मजबूर कर दिया । अन्त में सरकार ने एक "हाय आयोग" की स्थापना की जिसे एक सप्ताह में रिपोर्ट देने को कहा गया रिपोर्ट के सलाहानुसार सरकारी अश्रुआलय की स्थापना की गयी जिसका उद्घाटन माननीय पराजयनारायण ने जिंदगी में पहली बार रोते-रोते किया । जहाँ एक अवर क्लर्क की जगह निकाली गयी जो एक लम्बा-चौड़ा रजिस्टर लेकर बैठा था । प्रत्येक रोने वाले को एक फार्म भरना पड़ता था कि मैं निजी कारणों से रोना चाहता हूं और सरकार उसके लिए उत्तरदायी नहीं है और डाक्टर का प्रमाण-पत्र संलग्न करना पड़ता था कि यह रोने के काबिल है । सरकारी औपचारिकतायें बढ़ती जा रही थीं ।

दूसरी ओर सेठ बाटलीवाला का अश्रुआलय दिन दूनी और रात चौगुनी तरक्की कर रहा था ! अखबारों में बड़े-बड़े विज्ञापन आते रहे । रेडियो, टी. वी. में अमीन स्यानी की आवाज गूंजने लगी व विज्ञापनों में मीना कुमारी, दिलीप कुमार के सन्दर्भ दिये जाने लगे । सुना है सेठ बाटलीवाला दिल्ली, कलकत्ता, मद्रास जैसे बड़े-बड़े शहरों में भी नये-नये अश्रुआलयों की स्थापना करने पर विचार कर रहे हैं ! दिल्ली में यमुना के किनारे राजघाट के पास मैं भी एक अश्रुआलय का इन्तजार कर रहा हूं जहाँ मैं रो कर मन की शान्ति प्राप्त कर सकूं । ●

## दुगुना लाभ

फिल्म निर्देशक
यूँ बोला हीरो से
फिल्म के अन्तिम दृश्य में
तुम्हें अत्यन्त गम्भीर होना है—
हृदय ही हृदय में रोना है
शक्ल में दिखलाई देने वाले भाव ऐसे हों
जैसे न मिला हो तीन दिनों से खाना,
होठों पर हो
गम से परिपूर्ण एक गाना !
हीरो ने दिया उत्तर
यदि आप हमारी एक बात मान लें
यह रोल मुझे न देकर
देश के किसी बेरोजगार युवक को दें
तो दुगुना लाभ हो जायेगा—
फिल्म में वास्तविकता तो आएगी ही
किन्तु साथ ही
उस बेरोजगार युवक का परिवार
आपको हजारों दुआएं देगा
जब उसका कई दिन से भूखा परिवार
एक वक्त भरपेट भोजन खाएगा ।

—इंदु नागोरी